खंड : XIV अंक : 11 व 12

नवम्बर - दिसम्बर, 2002

VISHWA NIRMALA DHARMA
UNIVERSAL PURE RELIGION

# चैतन्य लहरी

जो लोग सहजयोगी नहीं, उनसे आप अवश्य प्रेम करें और उन्हें आत्म साक्षात्कार दें।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

1 सहजयोग का अर्थ – 11.11.79

15 चिकित्सा सम्मेलन – 2.04.2002

23 ईस्टर पूजा – 21.04.2002

32 सहस्रार पूजा – 5.05.2002

43 श्रीमाताजी चीन में 16–19, दिसंबर, 2001

46 विराट के अंग–प्रत्यंग, हाँग–काँग, 18 दिसम्बर, 2001

49 मेरा हार्दिक प्रणाम

# सहजयोग का अर्थ

11.11.79, London

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सहजयोग आपके अन्दर जीवाणु की तरह से विद्यमान है। यह आपके अन्दर जन्मी हुई चीज़ है। व्यक्ति के अन्दर ये अन्तर्जात होती है, स्वतः इसका अंकुरण होता है और अभिव्यक्ति होती है। बिल्कुल वैसे ही जैसे आप छोटे से बीज को अंकुरित होकर वृक्ष बनते हुए देखते हैं। यही सहजयोग है। अन्य सभी योग जो इसके साथ–साथ चलते हैं, वे सब सहजयोग के ही अंग–प्रत्यंग हैं। इन्हें इससे अलग नहीं किया जा सकता। मुझे लगता है कि लोगों में कुछ गलत–फहमी है। योग के चार अंग होते हैं। ये सोचना भी गलतफहमी न होगी कि वे अलग–अलग हैं। जब हम कहते हैं कि हमने खाना खाया है तो इसका अर्थ ये नहीं होता कि बोल्ट की तरह से ये हमारे शरीर में चला गया और फिर बोल्ट की तरह से ही शरीर से बाहर निकल गया। क्या ऐसा हो सकता है? इसका अर्थ ये है कि आपने अपने मुँह में इस खाने को चखा, इसका अर्थ ये है कि अपने मुँह में आपने लार (Saliva) का उत्सर्जन किया और बाद में यह अन्य अवयवों में गया, वाहिका (Trachea) में से गुजरा फिर ग्रास नली (Oesophagus) में से पेट के एक भाग में पहुँचा, फिर छोटी–आँत में गया और तत्पश्चात् बड़ी आँत में पहुँचा। यह सारा आडोलन एक के बाद एक क्रिया आदि एक दूसरी तरह के आड़ोलन के माध्यम से होता है जो अवयवों में मौजूद है जैसे पेट स्वतः खाए हुए पदार्थ को नीचे को धकेलता है। ये सब आपके मस्तिष्क से आता है। अनुकंपी नाडीतन्त्र और पराअनुकम्पी नाडी तन्त्र (Sympathetic, Parasympathetic) गतिशील हो उठते हैं और इसे कार्यान्वित करते हैं। ये एक बहुत बड़ी प्रणाली है और एक बहुत बड़ी संस्था है जो ये कार्य कर रही है। आप यदि इसे पृथक करना चाहें तो पाचन प्रणाली भिन्न है, मस्तिष्क प्रणाली भिन्न है, स्नायु प्रणाली भिन्न है। आप इन्हें इस तरह से अलग नहीं कर सकते कि आपका मस्तिष्क एक तरफ लटका रहे तथा पाचन प्रणाली दूसरी ओर। इस जीवन्त संस्था का ये समग्र रूप है। ये संस्था एक दूसरे अवयव को समझती है और उनकी माँगों पर प्रतिक्रिया करती है। इस प्रणाली को आप अलग–अलग नहीं कर सकते। परन्तु हमारे मस्तिष्क इतने विघटित (Disintegrated) है या ये कहें कि हमारे अन्दर की और बाहर की हर चीज़ को विघटित करने में इतने कुशल हैं कि हम इस जीवन्त चीज़ – योग (Yoga) को भी विघटित कर देना चाहते हैं। योग मृत संस्था

नहीं है। यह एक जीवन्त प्रक्रिया है पूर्णतः जीवन्त प्रक्रिया। जीवन्त प्रक्रिया होने के कारण आप इसके विषय में कुछ नहीं कर सकते। अतः यह सहज है। अधिक से अधिक आप इसे थोड़ा बहुत इधर–उधर कर सकते हैं, थोड़ा बहुत धकेल सकते हैं, बस। जैसे एक पेड़ बढ़ रहा है। जापान में लोग पेड़ को एक विशेष आकार देना चाहते हैं तो वे पहले एक डाली को काटते हैं, उसे कुछ ज्यादा मोड़ देते हैं, फिर दूसरी डाली को काटकर उसे मोड़ते हैं और इस प्रकार से पेड़ को विशेष आकार देते हैं। परन्तु जो भी चीज़ जीवन्त है वह हमारे अन्दर बहुत सी जटिल संस्थाओं के साथ मिलकर स्वतः ही कार्यरत है। ये संस्थाएं भी जीवन्त हैं और उन्हें इस बात का ज्ञान है कि वे क्या कर रही हैं। उदाहरण के रूप में आपका शरीर मेरे प्रति आपकी तर्कबुद्धि से कहीं अधिक चेतन है। मान लो आप भूत–बाधित व्यक्ति हैं परन्तु आप ये स्वीकार नहीं करेंगे कि आप भूत–बाधित हैं। आप इस बात को स्वीकार नहीं करेंगे। मैं भी ऐसी कोई बात नहीं कहूंगी क्योंकि इस प्रकार की किसी भी अन्दर विद्यमान चीज़ को मैं नहीं लेना चाहूंगी। मानव प्रकृति का मुझे ज्ञान है। उन्हें यदि इस तरह की कोई चीज़ बताई जाएगी तो आप निश्चित रूप से अपने लिए कष्ट को बुलावा देंगे। इसलिए मैं आपको ये बातें नहीं बताती। परन्तु शरीर मुझे पहचानता है जब आप मेरे सम्मुख आते हैं तो यह थर–थर काँपता है। ये बात सत्य है या नहीं आप मुझे बताएं।

ये शरीर जीवन्त है ये मृत शरीर नहीं है। जो भी चीज़ जीवन्त है उसकी भली–भाँति देखभाल होती है, उसका आयोजन किया जाता है और ये सब कार्य जीवन्त रूप से किया जाता है। ये बात आप नहीं समझ पाते क्योंकि हम मृत चीज़ों पर ही कार्य करते हैं। मान लो मुझे ये यन्त्र चालू करना है तो मुझे इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि इसकी एक तार है जो मुझे ऊर्जा स्रोत से जोड़नी पड़ेगी, तभी ये यंत्र कार्य करेगा। मैं सदैव कहती हूँ कि सहजयोग ऐसा ही है कि आप अपनी तार को निकालकर ऊर्जा स्रोत से जोड़ दें। परन्तु क्या आप सोचते हैं कि ये इतना सुगम है? क्या आपको इस बात पर विश्वास है कि आपने कुण्डलिनी को वहाँ से उठाकर सहजयोग से जोड़ देना है? बात ऐसी नहीं है जब कुण्डलिनी का अंकुरण आरम्भ होता है, जब जागृति आरम्भ होती है तो यह भिन्न चक्रों में से गुजरती है। कैसे? रीढ़ के अन्तिम छोर पर विद्यमान कुण्डलिनी के ऊपर उठने की व्याख्या आप किस प्रकार करते हैं? अब यदि मैं आपसे बताऊं कि यह आपकी पाचन प्रणाली से भी कहीं अधिक है क्योंकि कुण्डलिनी जो कि एक ऊर्जा मात्र है यह सोचती है, समझती है, आपको प्रेम करती है, आपके इस जीवन के विषय में और पूर्व जन्मों के विषय में सभी कुछ जानती है। वह यदि इतनी समर्थ है, यदि वह सब कुछ जानती है, अपने आपमें यदि वह पूर्ण संस्था है और उसे यदि उठकर आपके सिर तक आना है तो क्या ये सुगम कार्य है? ये कठिनतम कार्य है। कहीं यदि

आपको कोई पत्थर पड़ा मिले तो इसे उठाकर आप जहाँ चाहे फेंक सकते हैं। ऐसा करना क्या सुगम नहीं है? एक छोटा सा कीड़ा भी इस बात को जानता है कि अपना जीवन बचाने के लिए उसकी ओर आते हुए साँड के रास्ते से किस ओर हट जाना है। साँड यदि कहीं बैठ जाए तो उसे वहाँ से उठा पाना असंभव है। अपने स्तर पर आप जो चाहे प्रयत्न करते रहें। भारत में यह कार्य करने के लिए बहुत से उग्र तरीके हैं। लाल मिर्चे जलाकर उनका धुँआ आप बैल की नाक में सुंघा दें केवल तभी साँड वहाँ से उठेगा अन्यथा जो चाहे करते रहें साँड वहाँ से नहीं उठेगा। अत्यन्त आनन्द पूर्वक वो वहाँ पर बैठा रहेगा। कभी–कभी इस तरह के बैलों से भी आपका वास्ता पड़ता है, कभी–कभी ऐसा भी होता है। परन्तु इस कुण्डलिनी को जागृत करना, जो कि सोचती है, समझती है, हर व्यक्ति की व्यक्तिगत माँ है, चाहे जब–जब भी उसने जन्म लिया हो, जो आपके विषय में सभी कुछ जानती है, आपको सर्वाधिक प्रेम करती है, वही आपको आत्म–साक्षात्कार देती है, आपको आपका पुनर्जन्म देती है। तो ये आपकी माँ है। तो इस प्रकार की कुण्डलिनी जो हमारे अन्दर विद्यमान है उसे उठा पाना तो कठिनतम होना ही चाहिए। यही कारण है कि लोग कहते हैं कि कुण्डलिनी को उठाना अत्यन्त दुष्कर है ये बात ठीक है। अतः व्यक्ति को साँड को उठाने के तरीके खोज निकालने होंगे। क्योंकि कुण्डलिनी पूर्ण धर्मपरायणता है, पूर्ण पावनता है। आपके मस्तिष्क द्वारा कल्पना किया जाने वाला आदर्शतम व्यक्तित्व है। यह किसी भी प्रकार की मूर्खता, झूठ, असत्य आदि किसी भी चीज़ को बर्दाश्त नहीं करती। यह निर्मल है, आप इसे निर्मल कह सकते हैं। यह पावन है। यह पावनता का अवतरण है। यह पावनता की मूर्ति है। किसी भी प्रकार की बेवकूफी को यह स्वीकार नहीं करती और न ही यह किसी भी प्रकार का समझौता करती है। ये आपके अन्दर विद्यमान है आप देखें कि आप कितने सुन्दर हैं? किसी भी चीज़ का इसे भय नहीं है। न इसे किसी चक्कर में फँसाया जा सकता है, न इसे सम्मोहित किया जा सकता है और न किसी चीज़ से इसे प्रलोभित किया जा सकता है। ये प्रेम करती है। परन्तु इसका प्रेम इतना पावन है कि अपने प्रेम से अधिक पावन इसके लिए कुछ भी नहीं है। किसी भी मामले में ये समझौता नहीं करती और यही आपको आपका आत्म–साक्षात्कार देती है। अब तक जो मानव इसके विषय में जानते हैं उन्हें उसे प्रसन्न करने के तरीके खोजने होंगे। कौन सी चीज़ इसे नाराज़ करती है? क्यों ये उठना नहीं चाहती? उन्हें तौर–तरीके खोजने पड़े और इस खोज के परिणाम स्वरूप भिन्न प्रकार के योग सामने आए जैसे 'राजयोग', 'हठयोग' आदि तीसरी प्रकार के योग को आप 'क्रियायोग' कहते हैं। मेरे विचार से क्रिया और राजयोग एक ही चीज़ है, इनकी एक ही शैली है, तथा भक्तियोग, ज्ञानयोग और 'कर्मयोग' इन सब विधियों को मानव साँड को उठाने के लिए उपयोग

करना चाहता है। कहने से मेरा अभिप्राय है कि इन सब तरीकों से व्यक्ति कुण्ठित हो जाता है और स्वयं को समीपतम वृक्ष से फाँसी लगा लेना चाहता है। तो यह एक अन्य प्रकार का कुण्ठित रोग है। इनके अतिरिक्त परपीड़नशील योग (Sadistic Yoga) है फिर पीटने वाला योग (Beating Yoga) है और इस प्रकार से ये चलता रहता है। एक चीज़ से दूसरी बेहतर चीज़ तक जाना फिर धर्मान्धता। क्योंकि मानव के लिए चैन से बैठना अत्यन्त कठिन है। उन्हें चुनौती मिलती है, 'ओह, ये साँड नहीं उठता, मैं इसे उठाऊंगा।' जबकि उन्हें इसका अधिकार नहीं होता। जो लोग आत्म–साक्षात्कारी भी हैं, उन्हें भी इसका ज्ञान नहीं है क्योंकि उन्होंने कुण्डलिनी का सृजन नहीं किया, बिल्कुल वैसे ही जैसे ये मशीनरी मुझे मिल भी जाए तो भी मैं इसे चलाना, इसका उपयोग करना नहीं जानती, चाहे मैं प्रयत्न करती रहूँ। हो सकता है, इस 'प्रयत्न' में मैं अपने हाथ ही जला लूँ। अतः इस प्रकार के उल्टे–सीधे प्रयत्न बहुत प्रकार के योगों को इस विश्व में जन्म देते हैं और हर व्यक्ति इस बात से आश्चर्य–चकित है कि इतने सारे योग किस प्रकार हो सकते हैं! हमें यह योग अपनाना चाहिए कि वो योग? बुद्ध को मानना चाहिए या महावीर को या ईसा–मसीह को या किसी अन्य को। ये सब है क्या? इसके बाद 'चर्चयोग' और बुडू (Budu) है और जादू टोने (Witch Craft) में भी क्या हानि है, ये बात उस दिन किसी ने कही। कोई बुराई नहीं परन्तु इनसे साँड और दृढ़ता से अपने स्थान पर जम जाएगा। बूडू से यह उठेगा नहीं। अतः लोगों को वह उपाय खोजना होगा। शीर्षासन में खड़े होने से भी बैल नहीं उठेगा, नहीं ये नहीं उठेगा, चाहे आप अपनी गर्दन तोड़ लें ये नहीं उठेगा।

तो हमें क्या करना चाहिए? हमें इस बात का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए कि हमारे अन्दर विद्यमान कुण्डलिनी क्या है? ये सभी योग जो प्रचलन में आए हैं ये लोगों के अनुभवों से पनपे हैं क्योंकि जब लोगों ने इस कुण्डलिनी को उठाने का तथाकथित प्रयत्न किया तो वे मेंढक की तरह से उछलने लगे। इसका ये परिणाम निकाला गया कि मेंढक की तरह से उछलने से कुण्डलिनी उठ जाती है। फिर कुछ लोगों ने अपने वस्त्र उतारने शुरु कर दिए। इस प्रकार की अटपटी चीजें शुरु कर दीं। उनमें से गर्मी निकलने लगी इसलिए उन्होंने सोचा कि यदि हम वस्त्र उतार देंगे तो हमें परमात्मा मिल जाएंगे। कुछ अन्य लोगों को पेट में एक प्रकार की पकड़ महसूस हुई या कुछ लोगों को अपने अन्दर ये सब चीज़ें घटित होती हुई दिखाई देने लगती है। उन्होंने इसे मूलबन्ध का नाम दिया। उन्होंने कहा कि बन्ध लग गया है। किसी चीज ने वहाँ पकड़ लिया है। तो क्रिया योग ये है कि आप अपनी जिह्वा को यहाँ से लेकर, मेरे कहने से तात्पर्य ये है कि उसके तन्तु को नीचे से काटकर जिह्वा को ऊपर की ओर घुमाएं जहाँ ये गले की जड़ में स्थित छोटी जिह्वा को दबाए। प्रायः वे अपनी जिह्वा को घुमाने में ही लगे रहते हैं

और यह चलता रहता है। लोग अपनी जिह्वा को विशुद्धि चक्र तक ले जाते हैं वे सोचते हैं कि विशुद्धि यही है और उनकी ये सोच ही बहुत बड़ी समस्या है। तो वे अपनी जिह्वा को पीछे गले की ओर धकेलते हैं और सोचते है कि इसे गुदगुदाने से वे कुण्डलिनी को उठा लेंगे। हम बिल्कुल इससे भिन्न कर रहे हैं प्रभाव कारण जड़ तक जाना होगा तभी आप प्रभाव तक पहुँचेंगे। क्या आप मेरी बात को समझ पाए हैं? विशुद्धि चक्र, जो कि यहाँ है और अत्यन्त सूक्ष्म है, यदि ये खराब हो जाए तो इसके प्रभाव महसूस होंगे। इसके कारण आपकी जिह्वा प्रभावित हो सकती है, आपकी आँखे प्रभावित हो सकती हैं, आपकी नाक प्रभावित हो सकती है, आपके गाल प्रभावित हो सकते हैं। कुल मिलाकर ये 16 पंखुड़ियों के प्रभाव हैं ये सभी प्रभावित हो सकती हैं। अपनी नाक को गुदगुदाने से आप विशुद्धि चक्र को नहीं छू सकते। क्या ऐसा नहीं है? क्या आप मेरी बात को समझ रहे हैं? उदाहरण के रूप में जिस केन्द्र से यहाँ बिजली आ रही है उसे गुदगुदाने से आप उसे ठीक नहीं कर सकते। आपको जड़ों तक जाना होगा। किसी पेड़ पर यदि आप देखते हैं कि कोई एक फल सड़ रहा है या सारे फल सड़ रहे हैं तो फलों का इलाज करने से क्या आप उस रोग को ठीक कर सकते हैं? आपको जड़ों तक जाना होगा।

तो जब इन लोगों ने ये सब मनुष्यों पर घटित होते हुए देखा तो उन्होंने बहुत सी विधियाँ बना लीं। ये सभी गलत हैं और सभी ठीक हैं। ये बात समझने का प्रयत्न करें। ये बहुत साधारण है। आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् वे सब ठीक हो जाते हैं परन्तु आत्म–साक्षात्कार से पूर्व वे सब गलत है। बिल्कुल वैसे ही जैसे कार का इंजन चालू होने से पूर्व यदि आप उसका ब्रेक दबाएं या उसका स्टीयरिंग धुमाएं तो आप कार को खराब कर रहे हैं। कार का इंजन जब चालू हो जाए और आपको कार चलानी भी आती हो, आप कार चलाने में कुशल हों तब सब कुछ ठीक है। अन्यथा जिस कार में मुझे मेरे घर से आश्रम तक लाना था वह मुझे कहीं भी धोखा दे देगी। इसी प्रकार से जिन चीज़ों का आत्म–साक्षात्कार से पूर्व कोई अर्थ न था उन्हें आप आत्म–साक्षात्कार के बाद समझने लगते हैं।

आइए हठयोग का उदाहरण लेते हैं। हठयोग भी चक्रों पर आधारित होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। निःसन्देह ये भी ईश्वरीय प्रावधान पर आधारित है। सारे अष्टांग, हठयोग के आठों भाग, इन्हें आप मानव के नज़रिये से देखें। मानव के लिए हठयोग क्यों बनाया गया। सर्वप्रथम इसलिए कि वे अपने चित्त को ईश्वर के प्रावधान पर लगाएं अर्थात परमात्मा के अस्तित्व पर लोग अपने चित्त को लगाएं अन्धविश्वासों पर नहीं। वे इस बात को समझे कि परमात्मा है ताकि व्यक्ति स्वयं को विनम्र बना सके। फिर आप किसी साक्षात्कारी व्यक्ति को गुरु मानकर उसके पास जाएं। गुरु का अर्थ है कि वह व्यक्ति कम से कम आत्म–साक्षात्कारी हो, कोई भी ऐरा–गैरा नत्थूखैरा

गुरु बन बैठता है! ऐसा व्यक्ति मूर्ख है। गुरु को आत्म–साक्षात्कारी होना ही चाहिए। यदि वह आत्म–साक्षात्कारी है तो वह ऐसा ही कहेगा। वह अलग होने की बात नहीं करता, वह अधिकार की बात करता है क्योंकि वह अधिकारी है। जो लोग अलग होने की बात करते हैं, रोने–बिलबिलाने आदि की बातें करते हैं वो भी अन्य लोगों की तरह से अन्धे हैं। उन्हें आपका नेतृत्व करने का कोई अधिकार नहीं। इस मामले पर विनम्रता की कोई बात नहीं। कहने का अभिप्राय ये है कि मेरे पास यदि लाल शाल है तो मुझे कहना चाहिए मेरे पास लाल शाल है। इसमें विनम्रता की क्या बात है? मेरा अभिप्राय ये है कि आप जो हैं वही बताने में क्या हानि है। आप यदि वह नहीं है, जब आपमें वह गुण नहीं है फिर भी यदि आप अपने को वह बताते हैं तो यह अहंकार है। परन्तु यदि आप वह हैं तो आपको यह कहना चाहिए कि "मैं ही प्रकाश हूँ, मैं ही मार्ग हूँ।" कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि ऐसा कहते हुए ईसा–मसीह अहंकार नहीं कर रहे थे। इसमें बुरा मानने की क्या बात है?

तो हठ योग भी यदि करना हो तो आत्म–साक्षात्कारी व्यक्ति के मार्ग दर्शन में करना चाहिए, केवल आत्म–साक्षात्कारी व्यक्ति के मार्ग दर्शन में ही नहीं परन्तु उस व्यक्ति के मार्ग दर्शन में जिसने शक्ति पथ की कला में कुशलता प्राप्त कर ली हो। शक्ति–पथ की कला में जो कि कुण्डलिनी जागृति है। पथ प्रदर्शक व्यक्ति में कम से कम ये योग्यता होनी चाहिए। निःसन्देह सहजयोगी कुण्डलिनी को वैसे ही उठा लेते हैं, ये बात भिन्न है। परन्तु अन्य कोई व्यक्ति इस कार्य को नहीं कर सकता। केवल आप ही लोग इस कार्य को कर सकते हैं क्योंकि आप अधिकारी हैं और तुरन्त कुण्डलिनी को उठा लेते हैं। इन हठयोगियों ने क्या किया कि इसे शारीरिक स्तर पर ही उभारा। अतः आपको ईश्वरीय प्रावधान (यम, नियम) का ज्ञान होना चाहिए। और वो भी पच्चीस वर्ष की आयु से पूर्व। पच्चीस वर्ष की आयु से पूर्व आपको स्वयं को अनुशासित कर लेना चाहिए अर्थात आपको ये समझ लेना चाहिए कि उचित क्या है और अनुचित क्या है। अब जिन लोगों ने पन्द्रह वर्ष की आयु तक दुनिया के सभी कुकृत्य कर लिए हैं वे अब पच्चीस वर्ष की आयु में यम नियम सीखने का प्रयत्न कर रहे हैं! किस प्रकार आप ये कार्य कर सकते हैं, मुझे बताएं। मान लो कि कार को आपने पूरी तरह से खराब कर दिया है तो आप अधिक से अधिक इसकी बीमा की रकम के लिए ही तो कह सकते हैं। वो भी यदि आपने बीमे की किस्त चुकाई हो। अब किस प्रकार आप ये आशा कर सकते हैं कि कार बिल्कुल नई की नई हो जाए जैसे फैक्ट्री से आई हो, बिल्कुल नई हो जाए! जिस घोड़े का दुरुपयोग किया गया हो क्या वह दौड़ जीत सकता है? यह बात ठीक नहीं है। अतः यह समझना चाहिए कि यम–नियम तथा अन्य चीज़ें हमारे लिए नहीं हैं, विशेष रूप से पाश्चात्य लोगों के लिए तो यह किसी भी प्रकार से नहीं हैं। हमें यह बात स्वीकार कर लेनी चाहिए चाहे

प्रयोग करते हुए या जैसे भी। हमने बहुत सी गलतियाँ कर ली हैं और अब भी प्रयोग (Experiment) किए चले जा रहे हैं। मैं पुनः वही शब्द कहूंगी कि हमने जो भी किया है उससे स्वयं को, अपने शरीर को बहुत हानि पहुँचाई है क्योंकि हमारा पथ प्रदर्शन करने वाला कोई भी न था। हम स्वयं को हानि पहुँचाना नहीं चाहते थे परन्तु गलती से ऐसा हो गया, अब क्या करें? ये बड़ा गम्भीर मामला है लोग बीमार हैं वे हठ योग नहीं कर सकते। सारा वातावरण रोगी है, पूरा स्थान रोगी है! उन्हें प्रेम की आवश्यकता है, व्यायाम की नहीं। उन्हें स्काउट्स की आवश्यकता नहीं है, उन्हें तो ऐसा व्यक्ति चाहिए जो उन्हें प्रेम कर सके, रोगमुक्त कर सके और उन्हें स्थापित कर सके।

आजकल हठ योग में प्रेम का एक शब्द भी नहीं है क्योंकि लोग इसके लिए पैसा देते हैं। केवल एक चीज़ है–प्रेम, प्रेम ही केवल एक चीज़ है जिसे पैसे से खरीदा नहीं जा सकता। क्या ये बात सच नहीं है? प्रेम के लिए किस प्रकार आप धन दे सकते हैं। यही कारण है कि आज का हठ योग मात्र मिथ्या है। परन्तु आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् आप हठ योग का उपयोग कर सकते हैं क्योंकि आप पावन हो जाते हैं, स्वच्छ हो जाते हैं, आपके जख्म ठीक हो जाते हैं, भर जाते हैं। लोग जख्मी हैं, गहन चोट खाए हुए हैं, बहुत दुखी हैं। आपके स्पर्श मात्र को वो महसूस करेंगे। उनमें जब स्वयं को सम्भालने की शक्ति ही नहीं है तो उनसे बड़ी–बड़ी चीज़ों के विषय में बात करने का क्या लाभ है? इसका उन पर बहुत दबाव पड़ेगा क्योंकि उनमें से कोई भी आत्मसाक्षात्कारी नहीं है और न ही वो शक्ति पथ में कुशल हैं। इसीलिए कहा गया था कि आपको किसी ऐसे गुरु के पास जाना पड़ेगा जो आत्मसाक्षात्कारी हो। आप जंगलों में जाएं और पच्चीस साल तक वहाँ रहें और उस गुरु के पथ प्रदर्शन में अभ्यास करें पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करें। ब्रह्मचर्यमय वातावरण में रहें।

अब क्रियायोग पर आते हैं। क्रिया योग में जीभ को बाहर निकालना, जीभ के तन्तु को काटकर उसे पीछे को मोड़कर विशुद्धि चक्र को गुदगुदाना मैं नहीं समझ पाती। कभी–कभी तो आपकी तर्क बुद्धि बिल्कुल ही चली जाती है। इस प्रकार के कार्यों से आप सोचते हैं कि आप अपने अन्दर की इस महान शक्ति को जागृत कर लेंगे? उस शक्ति को जो सदसदविवेक है और जो हर चीज़ को समझती है। इस तरह से आप उसको बेवकूफ नहीं बना सकते। तो ये सब हथकंडे जो हम अपने पर आज़मा रहे हैं, स्वयं को एक मामले में थोंपना या दूसरे मामले में थोंपना आदि, इससे आप अपने यंत्र को खराब करने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं कर रहे। कुण्डलिनी जब विशुद्धि चक्र से उठती है तो चक्र का विस्तरण (Dilation) होता है। तब आपकी जिह्वा स्वतः ही अन्दर को खिंच जाती है और आपकी आँखों का भी विस्तरण हो जाता है। मुझे आशा है कि कुण्डलिनी जागृति के लिए आँखों का विस्तरण करने के लिए वे आँखों में

एप्ट्रोफिन (Aptrophin) नहीं डालते।

तो ये सारी चीज़ें स्वतः घटित होती हैं। बन्ध लग जाते हैं। बन्ध के कारण पेट कुण्डलिनी को पकड़ लेता है, चक्रों को पकड़ लेता है। कुण्डलिनी जब ऊपर को आती हैं तो स्वतः ही चक्र बन्द हो जाते हैं ताकि ये ऊर्जा ऊर्ध्वगति की ओर रहे अधोगति में न जा सके। ये सारी चीज़ें हमारे अन्दर स्वतः घटित होती हैं, बन्ध भी लगते हैं। हो सकता है कि कुछ परा चेतन व्यक्ति अपने अन्दर देख पाते हों और ये सोचने लगते हैं। कि आप यदि पेट को इस प्रकार खीचें, अपनी जीभ अन्दर की ओर मोड़ें तो ये चीज़ें घटित हो जाएंगी। परन्तु कुण्डलिनी जागृति द्वारा ही ये सब घटित होता है। इन सब चीज़ों द्वारा कुण्डलिनी की जागृति नहीं होती। अब क्या आप मेरी बात समझ पाए? क्या आपने मेरी बात समझी? अब ये स्पष्ट है। यही कारण है कि ये क्रिया योग आरम्भ हुए। मेंढक की तरह से कूदना आरम्भ हुआ, यहाँ तक कि निर्वस्त्र रहने का भी आरम्भ हुआ। ये सभी चीज़ें उन लोगों के कारण है जो अनाधिकार कुण्डलिनी को उठाने का प्रयत्न कर रहे हैं। केन्द्रों में जब यह उठती है तब ये सारी चीज़ें घटित होती हैं परन्तु यदि आपका स्वास्थ्य ठीक न हो, आप बीमार हो, आपके शरीर की देखभाल करने के लिए आपका हृदय बहुत परिश्रम कर रहा हो और ऐसी स्थिति में आप यदि घोर परिश्रम वाले इन कार्यों को करें, इन सभी उपायों को उपयोग करें तो आप अपने शरीर–यन्त्र को खराब करते हैं। इसमें से विद्युत ऊर्जा गुजरनी है। अतः विद्युत को इसमें से बहना होगा। मैं यदि निराश होकर इस यंत्र में यहाँ से फूँक मारना शुरु कर दूँ या यहाँ से इसे छेड़ने लगूं, या तोड़ने लगूं तो इसमें से विद्युत नहीं प्रवाहित होगी। केवल ये यन्त्र समाप्त हो जाएगा। क्या आप मेरे स्पष्ट विचार को समझ गए है? ये बात बहुत स्पष्ट है कि यदि आप अपने यन्त्र को बिगाड़ने का प्रयत्न करेंगे तो अपने अन्दर की शक्ति को जगा नहीं पाएंगे। गुरु यदि आत्मसाक्षात्कारी होता तो वो आपको बताता। सर्वप्रथम वह आपकी कुण्डलिनी उठाता, कम से कम आपकी कुण्डलिनी उठाता और आपसे कहता शनैः शनैः कुण्डलिनी को उठने के लिए आप मार्ग बनाए। लोग जब कुण्डलिनी को उठाने का प्रयत्न करते हैं तो वे इसे एक–एक चक्र पर उठाते हैं। निःसन्देह वे मूलाधार को तो छू नहीं सकते। अतः ये लोग कुण्डलिनी को ज्यादा से ज्यादा नाभि तक ला पाते हैं। परन्तु अब इसे वहाँ पर रोका किस प्रकार जाए? तब वो कहेंगे खाना कम खाओ, अपने चित्त को इधर–उधर मत भटकने दो। आप खाना कम खाओ ताकि आपका चित्त खाने पर ही न बना रहे। स्वयं को निर्लिप्त बनाए रखो। ये सारे कार्य वे पच्चीस वर्ष से पूर्व की आयु में करवाते हैं। बहुत अधिक भूखे भी न रहो, नियमित समय पर खाओ, चित्त को बहुत अधिक बाहर की ओर मत रखो ताकि चित्त वहीं पर रहे और कुण्डलिनी ने पच्चीस वर्षों में जो एक इंच का थोड़ा सा उत्थान किया है वह कहीं वहाँ से भी नीचे न चली जाए। बार–बार वो जन्म

लेते हैं और कीड़ी की चाल से अपने उत्थान की ओर चलते हैं और इन सब तरीकों से वो आपकी कुण्डलिनी को वहाँ रोकते हैं और कहते हैं अधार्मिक जीवन मत बिताओ। आपको अत्यन्त धर्मपरायणतामय जीवन बिताना होगा। घोड़े को जब प्रशिक्षित करना होता है तो उससे पूर्व कि वो दौड़ में भाग ले उसकी आँखों के इर्द–गिर्द दो पर्दे लगा देते है। परन्तु सबसे अधिक महत्वपूर्ण दादा–दादी का प्रेम हुआ करता था जो बच्चों की देखभाल किया करते थे। गुरु का प्रेम उसका प्रशिक्षण तथा आत्मानुशासन भी महत्वपूर्ण है। जो गुरु आपसे पैसा लेते हैं क्या वे आपको व्यापार प्रबन्धन, उल्टे–सीधे तरीकों और धोखाधड़ी में प्रशिक्षण दे रहे हैं? उनके, सच्चे गुरुओं के, जीवन उनके प्रेम, ज्ञान एवं सूझ–बूझ से इस प्रकार परिपूर्ण हैं कि लोगों के चरित्र एवं व्यक्तित्व पर इसका सीधा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के रूप में भारत में अब कोई भी श्रीराम पर महाकाव्य नहीं लिख सकता क्योंकि अब भारत में कोई राम बचे ही नहीं हैं। संभवतः अब कोई आए भी नहीं। कोई भी इस प्रकार का महाकाव्य नहीं लिखता। लोग अब केवल कहानियाँ लिखते हैं। भारत में कविताएं भी ऐसी लिखी जा रही हैं जैसे आपके लार्ड–बायरन लिखा करते थे। अब श्रीमान बायरन ने भारत में जन्म ले लिया है। मेरे विचार से उन्होंने आपका देश छोड़ दिया है! उसी प्रकार से साहित्य में सारी गतिशीलता समाप्त हो गई है क्योंकि लेखकों के सम्मुख कोई आदर्श नहीं है। किसी भी व्यक्तित्व के विषय में वो सोच नहीं सकते। अतः महा काव्य इसी प्रकार से भिन्न होते हैं। जब हम ये चीजें सीखने के लिए जाते हैं तब हम अपने तथा–कथित गुरुओं को देखते है उनके जीवन को देखते हैं और हमारे अन्दर वैसी ही छाप रह जाती है। बिना ज्योतिर्मय हुए वे आपको कुछ भी सिखा नहीं सकते।

ये क्रिया योग भी ऐसा ही है। भारत के महान सन्तों ने वर्णन किया है कि ये जलन्धर योग और जलन्धर बन्ध तथा अन्य सभी पेट में घटित होते हैं अर्थात ये सभी बन्ध पेट में और हृदय में बनते हैं और ये सभी ग्रंथियाँ टूटती हैं। इसी बात का वर्णन किया गया है। कुण्डलिनी जब उठती है तो ये सब चीजें आपमें भी घटित होती है। मैं क्योंकि अत्यन्त कुशल स्वामिनी हूँ इसलिए ये सब आपमें भी घटित होता है। जब तक मैं कार्य समाप्त नहीं कर लेती मैं इसे आप पर नहीं छोड़ती। आपको तो बस इतना करना होता है, आत्म–साक्षात्कार के पथ को पूर्ण स्वतन्त्रता पूर्वक चुनना होता है। आपको केवल पूर्णतः स्वतन्त्र होना होता है। अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता में सहजयोग स्वीकार करना होता है और **अगर मुझे लगता है कि अपनी पूर्ण स्वतंत्रता में आपने इसे नहीं चाहा तो आप बहुत तेजी से सहज से बाहर चले जाते हैं। आप इसमें रहते ही नहीं, आप स्वयं ही दौड़ जाते हैं, और यदि ऐसा नहीं होता तो मैं इस बात का ध्यान रखती हूँ कि आप स्वयं ही दौड़ जाएं।**

अतः व्यक्ति को समझना चाहिए कि ये

सभी मार्ग, चाहे वह भक्ति मार्ग ही क्यों न हो मैंने आपको तीन प्रकार के भक्तों के विषय में बताया जो कामार्थ प्राप्ति के लिए आते हैं। मेरे पास बहुत से लोग रोग मुक्ति के लिए आए। यह अच्छी बात है, मेरे लिए यह अच्छा अवसर होता है। वे ठीक हो जाते हैं, उनमें प्रेम जागृत हो जाता है और वे मुमुक्षु (मुक्ति प्राप्ति के लिए इच्छुक) बन जाते हैं। ऐसे लोग महान सहजयोगी बन जाते हैं। भारत में ऐसे बहुत से सहजयोगी है जो महान सहजयोगी बन गए। आरम्भ में वे इलाज के लिए आए और महान सहजयोगी बन गए। इन सभी अवस्थाओं को वो पार कर सकते हैं।

अतः व्यक्ति को समझना चाहिए कि यह महायोग का समय है जहाँ ये सब अन्तर्योग अर्थात आन्तरिक घटनाएं स्वतः ही घटित होती हैं। मुझे आपकी कुण्डलिनी के साथ कुछ करना होता है, काफी कुछ करना होता है और वो इस बात को अच्छी तरह से जानती है। वह भी मुझे बहुत अच्छी तरह से जानती है इतना अच्छी तरह से कि मुझे देखते ही एकदम से उठकर ये सहस्रार पर आ जाती है। ये इतनी प्रसन्न होती है कि व्यक्ति पर इसका पहला प्रभाव बहुत ही अच्छा पड़ता है। व्यक्ति को लगता है कि उसने पा लिया है। पूरे आनन्द के साथ ये ऊपर उठती है। आप पा लेते हैं परन्तु पुनः वंहगियों पर चले जाते हैं। यद्यपि आपके सारे कष्ट और सभी समस्याएं दूर हो जाती हैं फिर भी आप अपनी वंहगियों को पकड़े रखना चाहते हैं क्योंकि संस्कार वश आप उनसे दूर हो गए हैं। अतः आप अपनी वंहगियों पर चले जाते हैं और पुनः वैसे ही असहज बन जाते हैं। यह मात्र अभिनय है, थोड़े समय के लिए। परन्तु लम्बे समय तक यदि आप अभिनय किए चले जाएंगे तो ये वास्तविकता बन जाएगी। अभी तक आप खेल खेलते रहे, अब खेल समाप्त हो गया है। अतः आपको स्वीकार करना होगा कि अब आप महान हैं और अपने अन्दर आपने इसे प्राप्त कर लिया है। ये आपके अन्दर है, आप प्रकाश हैं, आपको ये बात स्वीकार करनी होगी कि अब आप प्रकाश हैं, आप पहले जैसे नहीं हैं। एक पुष्प के रूप में आप परिवर्तित हो गए हैं। आपको स्वयं पर विश्वास और भरोसा होना चाहिए क्योंकि अभी तक तो आप सभी प्रकार के लोगों से एकरूप थे, बेवकूफी भरे उल्टे–सीधे अनुभवों से जुड़े हुए थे। इस बात पर आप विश्वास नहीं करना चाहते। आप यदि थोड़ा सा भी इस बात को स्वीकार कर लें, ठीक से इस पर चलें तो आप इसमें भली–भांति स्थापित हो जाएंगे। मैं यहाँ आपको इसका स्वामित्व देने के लिए हूँ इस सब पर पूर्ण स्वामित्व देने के लिए। ये महायोग जब आपमें घटित हो जाता है तो आपको किसी अन्य चीज़ की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं रहती। सभी योग आपके चरणों में होंगे। इस प्रकार से आप अपने हाथ उठाएं, और कुण्डलिनी उठ जाएगी। ये सत्य है। आप इसे आजमाएं। कोई यदि बीमार है तो आप इस प्रकार से अपना हाथ रखें, वह व्यक्ति ठीक हो जाएगा। आप स्वयं आजमाएं। ये

महायोग है। सहजयोग का ये सर्वोच्च बिन्दु है। एक बार जब आप इसे प्राप्त कर लेंगे तो आपको कुछ अन्य करने की आवश्यकता नहीं रहेगी। आप वही बन जाते हैं क्योंकि कुण्डलिनी वही बनाने के लिए कार्य करती हैं और जब कोई चीज़ आपको पूर्णता प्रदान करती है तो क्यों आप कुछ अन्य करें? सहजयोग में आने के पश्चात् आपके साथ जो भी घटित हुआ उसकी सूची मैं आपको संस्कृत–भाषा में देने वाली हूँ। जिस अवस्था को प्राप्त करने के लिए लोगों को हजारों वर्ष कार्य करना पडता था वो आपको सहज में ही प्राप्त हो गई है। ये स्वीकार करना कठिन कार्य है कि इसे आपने सहज ही में प्राप्त कर लिया। बिना सिर के भार खड़े हुए या कोई अन्य व्यायाम किए हुए। क्या ऐसा नहीं है? परन्तु प्रतीक्षा करें और देखें कि आपको क्या प्राप्त हुआ है। निःसन्देह कुछ लोगों को ये अवस्था प्राप्त नहीं होती क्योंकि उनमें कोई समस्या होती है। कोई बात नहीं। यह कार्यान्वित हो जाएगा। परन्तु जिन्हें प्राप्त हो गया है, किसी विशेषता के कारण जिन्हें ये उपलब्धि प्राप्त हो गई है उन्हें इस विशेषता को खोजना है। अपने लिए आपने इसे खोजना है। इतनी आसानी से आपको प्राप्त हो जाने का एक कारण है। मुझे किसी ने बताया कि एक गुरु है जो आयु के अनुसार मंत्र देता है, ये मूर्खता है। पूर्णतः मूर्खता। आप इस बात को स्वीकार कर लें। कोई आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति आपको ये मंत्र नहीं देगा। यही कारण है कि मंत्र देना एक बहुत बड़ी चीज़ समझी जाती थी। परन्तु आज कोई भी ऐरा–गैरा नत्थू खैरा गधे की तरह से आपके कान में रेंकता है और आप सोचते हैं कि ये बहुत बड़ी चीज है, मैं किसी को नहीं बताऊंगा कि मुझे कौन सा मंत्र मिला है। ये लोग आपको बेवकूफ बनाने में लगे हैं, ये नहीं जानते ये स्वयं को बेवकूफ बना रहे हैं। जो कुकृत्य इन्होंने किए हैं उसका इन्हें बहुत बड़ा मूल्य चुकाना होगा। अतः मंत्र इस प्रकार से नहीं लिए जाते! व्यक्ति को बहुत सारी चीज़ें समझनी होती हैं जैसे आपका कुल–देवता क्या है? आपका अपना इष्ट देव कौन है? आपकी जन्मपत्री क्या है? आप कौन से ग्रहों पर पकड़ रहे हैं? इस स्थिति में मंत्र का दिया जाना, इसका समय, जन्म कुण्डली के समय विशेष अनुसार निश्चित किया जाता है। जन्मकुण्डली का कौन सा समय गुरु की जन्म कुण्डली से मिलता है? यही कारण था कि लोगों को मुश्किल से एक दो व्यक्ति प्राप्त होते थे। सन्त ज्ञानेश्वर ने भी अपने जीवनकाल में केवल एक व्यक्ति को नाम दिया और यहाँ पर ये सभी ऐरे गैरे नत्थू खैरे नाम बाँटे चले जा रहे हैं! मेरी समझ में नहीं आता। क्या इन भयानक–भयानक नामों के अतिरिक्त कुछ भी आसानी से उपलब्ध नहीं है? ये नाम यदि मैं भारतीयों को बताऊंगी तो वो सब समझ जाएंगे। इन विदेशी साधकों को इन्होंने ऐसे नाम दिए जैसे ईंगा, पिंगा, ठिंगा। सभी नाम आप सहजयोगियों के नियंत्रण में हैं, आप अपने मंत्र बना सकते हैं क्योंकि आपमें एक विशेष प्रकार का गुण है जिसका उपयोग आप कर

सकते है। जो भी मंत्र आप लें वह जागृत मंत्र होता है, आप इस बात को जानते हैं। आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् ये कहना अत्यन्त सुखद होता है कि यद्यपि अभी तक आप अपनी बाधाओं से मुक्त नहीं हुए होते फिर भी आप इसे कार्यान्वित कर सकते हैं। इससे आपकी कुण्डलिनी उठाने की शैली पर कुछ भी हानि नहीं होती। आप अन्य लोगों की कुण्डलिनी उठा सकते हैं, क्या ये बात सत्य नहीं है? अभी भी आप अन्य लोगों को आत्म–साक्षात्कार दे सकते हैं चाहे आप बाधित ही क्यों न हों। लोग कहते हैं कि मैं भूत से लड रहा हूँ। परन्तु यहाँ पर एक हाथ से आप स्वतः ही कुण्डलिनी उठा लेते हैं। परन्तु वहाँ बहुत सी आत्माएं आपको पकड़ने का प्रयत्न करती हैं। यहाँ आप एक हाथ से उन आत्माओं को समाप्त करते हैं और दूसरे से कुण्डलिनी उठाते हैं! इतनी पावनता से जिन लोगों की कुण्डलिनी उठाई जाती है उन्हें भी कोई हानि नहीं होती। अतः मंत्र लेने या देने के लिए व्यक्ति को एक सप्ताह तक निराहार रहना पड़ता है, बिना किसी पुरुष या महिला की शक्ल देखे, सभी प्रकार के कर्मकाण्ड करने के पश्चात् ही व्यक्ति को नाम प्राप्त होता है। कुछ गुरु तो अपने शिष्यों को कहते हैं कि प्रतिदिन 108 बार हाथ धोया करें। मंत्र देने से पूर्व सभी प्रकार की नेति क्रियाएं आदि करवाई जाती हैं। ये इतने सारे कर्मकाण्ड हैं, क्यों? क्योंकि आप अत्यन्त दुर्बल (Vulnerable) हैं। ये फास्फोरस (ज्वलनशील पदार्थ) की तरह से है और फास्फोरस को आप किसी के हाथ पर नहीं रख सकते हैं। किसी के हाथ पर रखने से पूर्व आपको सारे प्रबन्ध करने पड़ते हैं। परन्तु यदि आप सर्वशक्तिशाली बन जाते हैं तब क्या होता है? आप के लिए सभी कुछ बच्चों का खेल बन जाता है, सुगम हो जाता है। आप कुण्डलिनी उठाते हैं आप जानते हैं कि भिन्न चक्र हैं, इन चक्रों को आप ठीक कर सकते हैं। इन्हें ठीक करने का ज्ञान आपको है। यही कारण है कि यह महायोग है। इसे ऐसा होना पड़ता है। अन्यथा किस प्रकार हम इस विश्व की रक्षा करेंगे? किस प्रकार इस सृष्टि को व्यवस्थित किया जाएगा? इस बात का हमें पता लगाना होगा। कहने से अभिप्राय ये है कि परमात्मा को इस बात का पता लगाना पड़ा कि किस प्रकार आप सब साधकों को आशीर्वादित किया जा सके, किस प्रकार उनकी (परमात्मा) की अभिव्यक्ति हो सके और उनका कार्य पूर्ण हो।

तो यह महायोग है जिसमें सभी योग समाहित हैं। मानव अवस्था तक आने के लिए अब पाषाण युग (Stone Ages) में जाने की आवश्यकता नहीं है। ये बात इस प्रकार से है या आप ये कह सकते हैं कि भारत जाने के लिए अब मुझे कोलम्बस की तरह से जाने की आवश्यकता नहीं है जिससे मैं अमरीका पहुँच जाऊं। (मार्ग जानने वाले व्यक्ति को जो इसके विषय में सभी कुछ जानता है आपके पास आना होगा– किसी ऐसे व्यक्ति को जिसने ये सब किया हो और जो इस कार्य के सभी रहस्यों को जानता हो, आपको भली–भांति

पहचानता हो।) मैं मानव के विषय में अभी तक बहुत कुछ सीख रही हूँ। मैं सोचती हूँ मुझे अभी भी बहुत कुछ सीखना है–बहुत कुछ। क्योंकि मानव अत्यन्त विचित्र भी हो सकता है। ये बात आप नहीं जानते। मैं इस प्रकार से व्यवहार करती हूँ परन्तु अचानक मुझे लगता है कि हे परमात्मा ये सब क्या है? कभी–कभी तो आप मानवों के व्यवहार को देखकर मुझे लगता है कि यह मेरे लिए बहुत बड़ा रहस्योद्घाटन है! ये बहुत ही दिलचस्प बात है बहुत ही दिलचस्प। मानव बहुत ही अजीब जीव है। उसका व्यवहार कभी भी एक ही तरह का नहीं होता। उसके विषय में निश्चित रूप से आप कभी भी कुछ नहीं कह सकते। आप नहीं जानते कि वो कब कैसा व्यवहार करे। अत्यन्त दिलचस्प लोग हैं। सहजयोग में आने के पश्चात् आपको भी बहुत आनन्द आएगा।

भिन्न योगों के विषय में मैंने ये सब आपको बताया है। फिर भी आपके कोई प्रश्न है तो आप पूछ सकते हैं। परन्तु आपके प्रश्न विवेकपूर्ण होने चाहिएं। आप अपने प्रश्न पूछें क्योंकि मैंने ये सब आपको बहुत ही संक्षेप में बताया है। बाद में किसी वक्त मैं विस्तार में बताऊंगी।

उत्तर–ये लामा आदि सब गलत हैं। अपने बच्चों को मैं ये बात स्पष्ट बताना चाहती हूँ। इन्होंने आप लोगों के लिए बहुत सी समस्याएं खड़ी कर दी हैं। आप सब लोगों ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है। एक साधक से श्रीमाताजी पूछती हैं कि तुम्हें अभी तक नहीं प्राप्त हुआ, थोड़ी सी समस्या है कोई बात नहीं आपको मुझसे थोड़ा सा सहयोग करना होगा और आपको आत्म–साक्षात्कार प्राप्त हो जाएगा। आप अवश्य इसे प्राप्त करें ये मेरी इच्छा है। आपमें भी यदि ये इच्छा होगी तो हम एक ही स्थान पर पहुँच जाएंगे।

ये गुरु लोग इस शरीर यन्त्र को खराब करने के लिए कुछ चालाकियाँ अपनाते हैं। सम्मोहन करते हैं तथा सभी प्रकार के उल्टे–सीधे कार्य करते हैं। आपके अन्दर विराजमान कुण्डलिनी आपमें परमात्मा की इच्छा है। ये परमात्मा के लिए इच्छा नहीं है। आपके अन्दर यह परमात्मा की इच्छा है। केवल उसी इच्छा से इसे जागृत किया जा सकता है। परमात्मा की इच्छा को ही उठाया जा रहा है। परमात्मा की इच्छा ही शक्ति है और परमात्मा का प्रेम ही उनकी इच्छा है। उनकी इच्छा है कि वे अपनी शक्तियाँ, अपना वैभव और प्रेम करने की सामर्थ्य आपको प्रदान करें। इसी इच्छा को आपके अन्दर स्थापित किया गया है और यह सुप्त है। जब ये जागृत होती है तो आपके अन्तस में उनकी इच्छा पूर्ण होती है और आपकी पूर्ति हो जाती है। जब तक आप परमात्मा नहीं है, आप परमात्मा की इच्छा को नियंत्रित नहीं कर सकते। आत्म–साक्षात्कार के बाद परमात्मा आपको अपनी शक्तियाँ देता है जिनके द्वारा आप उनकी इच्छा का संचालन कर सकते हैं। अन्य लोगों की कुण्डलिनी आप उठा सकते हैं क्योंकि ये परमात्मा की ही इच्छा है। यह महानतम उपलब्धि है जिसे व्यक्ति प्राप्त कर सकता है क्या ऐसा नहीं है?

**प्रश्नः** आत्मसाक्षात्कार क्या है? मानव की रक्षा करने का सर्वोत्तम उपाय क्या है? क्या अन्य लोगों की कुण्डलिनी उठाने से और श्रीमाताजी आपको समझने से ही ये कार्य हो सकता है?

**उत्तरः** आत्मसाक्षात्कार द्वारा आप प्रकाश बन जाते हैं, ठीक है? अतः आपको अन्य लोगों को ज्योतिर्मय करना होगा। यह आपका एक कार्य है इसे समझ जाने पर आप विराट को समझ जाएंगे। इसका पूर्ण ज्ञान आपको होना चाहिए। आपको अपना और अन्य लोगों का ज्ञान होना चाहिए और अन्य लोगों को शुद्ध करने का आपको प्रयत्न करना चाहिए। केवल सभी को स्वच्छ करने से, सर्वत्र प्रकाश फैलाने से आप सभी कुछ ज्योतिर्मय कर सकते हैं। क्या ये बात ठीक नहीं है? हमारे अन्दर जिस चीज़ की कमी है वह है ज्ञान और चेतना। एक बार जब आप इन्हें प्राप्त कर लेंगे तो पूरा विश्व परिवर्तित हो जाएगा। आप इसी को खोज रहे थे। पूरे विश्व को आप परिवर्तित करना चाहते थे, क्या आप इस बात को जानते हैं? आपने ये सब क्यों किया? क्या आपको इसका ज्ञान है? क्योंकि पूर्व जन्मों में आप अत्यन्त महान और उच्च कोटि के साधक थे, यही कारण था कि आप खोज रहे थे। ठीक है आपसे कुछ गलतियाँ हुईं, परन्तु आप अत्यन्त गुण सम्पन्न लोग हैं। अपनी शक्ति को न भूलें। अधोगति की ओर न जाएं। क्योंकि आप उच्च कोटि के लोग थे इसीलिए आप परमात्मा को खोज रहे थे, इसीलिए आपने इस देश में जन्म लिया। पूरा विश्व परिवर्तित हो जाएगा। एक दीपक पूरे कमरे में उजाला कर सकता है परन्तु इसके लिए आपको अपनी बाती हर समय प्रज्जवलित रखनी होगी ताकि इससे प्रकाश निकलता रहे। अधिकतर विक्षिप्त लोग भयपीड़ित हैं, उनमें जटिलताएं हैं। क्योंकि वे कभी स्वयं को सुरक्षित नहीं समझते। जो देश युद्ध रत हैं उसका कारण ये है कि वे अन्दर से असुरक्षित महसूस करते हैं। क्योंकि उन्होंने स्वयं को नहीं समझा। यदि उन्होंने स्वयं को समझा होता तो वे दुखी न होते। आपमें विपुल वैभव छिपा हुआ है, क्या ये बात सत्य नहीं है? एक बार जब आप अपने वैभव को समझ जाएंगे तो कभी दुखी न होंगे और पूरा विश्व अत्यन्त सुखमय होने वाला है। आप यही सब खोज रहे थे क्या ऐसा नहीं है? आपका अपना वैभव है और अब आपने इसी का ज्ञान प्राप्त करना है। उदाहरण के रूप में चाहे आप इस कमरे में आ जाएं फिर भी इसके विषय में आप सभी कुछ नहीं जानते। आप यहाँ हैं। अतः मुझे आपको ये सब चीज़ें बतानी हैं। आप अपने अन्दर खोजें, अन्य लोगों में भी खोजें। यही सब कुछ कार्यान्वित कर रहा है।

**परमात्मा आपको धन्य करें।**

# चिकित्सा सम्मेलन

2 अप्रैल, 2002

## जवाहर लाल नेहरु सभागार

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान केन्द्र, नई दिल्ली

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सभी सत्य साधकों को मेरा प्रणाम। चिकित्सकों के सम्मुख बोलते हुए मुझे अपने विश्वविद्यालय के दिनों का स्मरण हो आया है। मैं भी चिकित्सा विज्ञान पढ़ी थी परन्तु भाग्य से या दुर्भाग्य से, लाहौर में हमारा विश्वविद्यालय बन्द हो गया। ऐसा नहीं था कि मेरा विश्वास पाश्चात्य चिकित्सा शिक्षा में न हो। परन्तु यह दोनों को जोड़ने का और समझने का सुनहरा अवसर था कि पाश्चात्य चिकित्सा शिक्षा में क्या कमी है।

इस चिकित्सा पद्धति की मुख्य कमी ये है कि चिकित्सा विज्ञान मानव को व्यक्तिगत रूप से मानता है। पूर्ण से (विराट से) जुड़ा हुआ नहीं। आप सभी विराट से जुड़े हुए हैं। परन्तु लोगों को किस प्रकार विश्वस्त किया जाए कि आप सब पूर्ण से जुड़े हुए हो, केवल व्यक्ति (अकेले) नहीं हो। क्योंकि हम सब पूर्ण से जुड़े हुए हैं, हमारी सभी समस्याएं भी सबसे जुड़ी हुई हैं। किसी व्यक्ति को आप एक चीज़ का रोगी और दूसरे को दूसरी का नहीं मान सकते। हो सकता है कि जिस व्यक्ति में एक समस्या है उसमें कुछ अन्य समस्याएं भी हों, बहुत सारी अन्य समस्याएं भी जुड़ी हुई हों जिन्हें आप पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान से खोज न सकें। उदाहरण के रूप में किसी व्यक्ति को आप शारीरिक रूप से बहुत बीमार देखते हैं, निःसन्देह, परन्तु आप ये नहीं जानते कि उसे क्या होने वाला है। बिल्कुल भी नहीं जानते कि वह आपके सम्मुख क्या समस्या लाने वाला है। क्या वह मानसिक रूप से ठीक है या बीमार है क्योंकि उसमें कुछ कमी तो है। अब हम कई चीज़ों के बारे में अच्छी तरह से जानते हैं परन्तु चिकित्सा विज्ञान में उसका कोई इलाज नहीं है और आप कहते हैं कि यह मनौदैहिक समस्या है या ये दैहिक समस्या है। इन दोनों में क्या सम्बन्ध है, ये बात हम नहीं जानते। आप हैरान होंगे कि कैंसर जैसी हमारी बहुत सी बीमारियाँ मनौदैहिक समस्याओं के कारण आती है जो लाइलाज हैं। विशेष रूप से कैंसर, या हम कह सकते हैं एड्स। ऐसे सभी रोग जिन्हें हम पूर्णतः लाइलाज और कठिन मानते हैं, ये हमारे बाईं ओर (Left Side) के सम्बन्धों के कारण आती है जिनके बारे में हम विश्वस्त भी नहीं होते (जैसा आपने शरीर तन्त्र के चित्र में देखा है)।

चिकित्सा विज्ञान को केवल दाईं ओर का ज्ञान है। इसका यह ज्ञान बहुत विस्तृत है यह सूक्ष्म नहीं है। मानव की बाईं ओर को

समझने की यह कोई आवश्यकता नहीं समझता और यही कारण है कि बाईं ओर का ज्ञान चिकित्सा शास्त्रियों को नहीं है। उदाहरण के रूप में एक व्यक्ति जो पागल है, जिसे पागलखाने भेज दिया गया है उसे हृदय रोग हो सकता है, क्यों? किस प्रकार वह पागल हुआ। दूसरी ओर से उसका क्या सम्बन्ध है? उदाहरण के रूप में एक रोगी कैंसर पीड़ित है। कैंसर के विषय में हम बहुत कुछ जानते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं, कि किस प्रकार इसके विषाणु फैलने लगते हैं आदि–आदि। हम सभी कुछ जानते हैं। परन्तु कैंसर किस कारण से होता है इस बात को कोई नहीं जानता और ये बात भी कोई नहीं जानता कि कैसे लोगों को कैंसर होता है।

जैसा आपने चित्र में देखा है हमारे अन्दर दो मुख्य नाड़ियाँ हैं। एक हमारी दाईं ओर की देखभाल करती है और दूसरी बाईं ओर की। बाईं ओर यदि समस्या है तो यह मनौदैहिक हो सकती है। मान लो आपका हाथ टूट गया है या आपके साथ कोई और शारीरिक समस्या है, वहाँ तक तो ठीक है। परन्तु यदि कोई जटिल मनौदैहिक रोग है तो चिकित्सक इसका इलाज नहीं कर सकते। खेद के साथ मुझे कहना पड़ रहा है क्योंकि आप लोगों को इस पक्ष (Left Side) का ज्ञान नहीं है। आप नहीं जानते कि व्यक्ति को कैंसर का रोगी बनने के लिए क्या चीज़ प्रभावित कर रही है। आपको जानकर हर्ष होगा कि सहजयोग में कैंसर का इलाज हो सकता है। यदि ये आरंभिक अवस्था में हो तो इसका इलाज बहुत आसान है। अन्यथा भी यह ठीक हो सकता है, विशेष रूप से रक्त कैंसर पूरी तरह से ठीक हो सकता है। आप हैरान होंगे कि ये हमारे जीवन के इन दो पहलुओं का ऐसा सम्मिश्रण है कि हम लाइलाज रोगों में फँस जाते हैं। लाइलाज रोगों की बहुत बड़ी सूची है जिसे मैं बताना नहीं चाहती क्योंकि आप इसके बारे में अच्छी तरह जानते हैं। परन्तु इस प्रकार के अधिकतर रोगों में बाईं ओर की जटिलता होती है। निःसन्देह आप दाईं ओर के बारे में भली–भांति जानते हैं, अब शरीर रचना, उसकी चीर–फाड़ और उसके बाद की चीज़ों को भी जानते हैं। ये सब आप जानते हैं परन्तु आपको इस बात का ज्ञान नहीं है कि बाईं ओर आपको किस प्रकार प्रभावित करती है।

अतः इस भाषण में मैं आपको बाईं ओर के विषय में बताना चाहूँगी, जिसके बारे में आपने कभी नहीं सुना, और जिसके विषय में आप विश्वास भी नहीं करते। बायां पक्ष हमारे भूतकाल का क्षेत्र है और जो लोग भविष्यवादी हैं वो भूत काल तथा बाएं अनुकम्पी से अधिक प्रभावित नहीं होते। परन्तु जो लोग बाईं ओर (भूतकाल) में रहते हैं उसकी चिन्ता करते हैं, अपने बीते हुए समय के विषय में जिन्हें खेद है, ऐसे सभी लोग इससे प्रभावित होते हैं। बाईं ओर के लोगों के विषय में यदि मैं आपसे बताऊँगी तो आपको सदमा पहुँचेगा। क्योंकि वास्तव में वे भूत–बाधित होते हैं। किसी मृत आत्मा की पकड़ उन पर होती है और वही मृत

आत्मा उन पर कार्य करती है। आपको इस पर विश्वास नहीं होगा परन्तु ये बात सत्य है। कोई भी व्यक्ति जो उदासीन है या तामसिक स्वभाव का है उसके साथ ऐसा घटित हो सकता है। इसके अतिरिक्त भी बहुत सी चीज़ें हैं जैसे ये झूठे गुरु। ये गुरु क्या करते हैं? ये व्यक्ति को सम्मोहित कर लेते हैं। मनुष्य का ये पक्ष चिकित्सा विज्ञान का क्षेत्र नहीं है। ये चिकित्सा विज्ञान से परे है। फिर भी चिकित्सकों को इसका ज्ञान होना चाहिए अन्यथा आप इन लोगों को ठीक न कर पाएंगे। हो सकता है आप रोग निदान कर लें परन्तु मनौदैहिक रोगों के शिकार ऐसे रोगियों का इलाज आप न कर पाएंगे।

आज की चिकित्सा समस्या ये है कि चिकित्सक मनौदैहिक रोगों का इलाज नहीं कर सकते। इसके लिए आपको अपनी एम. बी.बी.एस. की उपाधि की तरह से बहुत से वर्ष खर्च नहीं करने पड़ेंगे। यह अत्यन्त तीव्रता से होने वाला प्रशिक्षण है, बशर्ते है कि आप इसे करें। परन्तु इसमें पारंगत होने के लिए सर्वप्रथम आपको परमेश्वरी शक्ति (Divine Force) से एकरूप होना पड़ेगा। ये कार्य बिल्कुल भी कठिन नहीं है। परन्तु प्राप्त करने के पश्चात् आपको अपनी आध्यात्मिक योग्यता बनाए रखनी होगी।

अबोधिता (Innocence) प्रथम आध्यात्मिक योग्यता है। पहला चक्र जो आप महसूस करते है वह पावनता का है। आप यदि पावन हैं तो आप सुगमता से ऐसे रोगियों को ठीक कर सकते हैं जो इस प्रकार की लाइलाज बीमारियों से पीड़ित हैं। मैं कहती हूँ कि व्यक्ति को सर्वप्रथम आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। इस स्थिति में जब कुण्डलिनी उठती है तो यह आपके तालूरन्ध्र (Fontannel Bone Area) का भेदन करती है और आप सर्वव्यापी परमेश्वरी शक्ति से जुड़ जाते हैं। चाहे आप मुझ पर विश्वास न करें परन्तु अपना आत्मसाक्षात्कार पा लें। आपने यदि आत्म–साक्षात्कार प्राप्त कर लिया तो इस बात को समझ सकेंगे कि आपके रोगियों में किन चीज़ों का सम्मिश्रण है। क्या उसका रोग केवल शारीरिक है या उसमें बाईं ओर का सम्मिश्रण भी है। मैं हैरान थी कि उस दिन एक बच्चा मेरे पास आया। उसे मस्तिष्क–झिल्ली–सूजन (Meningitis) रोग था। वह ठीक हो गया। उसके माता–पिता ये समझ भी न पाए कि कैसे वह ठीक हो गया है। बच्चा जब ठीक हो गया तो मैंने उससे पूछा तुम्हारा मित्र कौन है? उसने एक लड़के का नाम बताया जिसका एक गुरु भी था। मैंने उसे बताया कि किस प्रकार आप हर समय उस गुरु को देखे चले जाते हैं? क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस प्रकार के गुरुओं के चंगुल में फँस जाते हैं। आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि जब तक आप आत्म–साक्षात्कार प्राप्त नहीं कर लेते, आप जान ही नहीं सकते कि कौन सच्चा है, कौन झूठा है। एक अबोध बच्चा जो मस्तिष्क झिल्ली सूजन (Meningitis) से पीड़ित था रातों रात ठीक हो गया!

सहजयोग के महान अनुभव पर आप आश्चर्य चकित होंगे कि यह महान आश्चर्य है और यही कारण है कि लोग इसे स्वीकार नहीं करते। ऐसे बहुत से मामले हैं जिनके माध्यम से हमने दर्शाया है कि जिन रोगियों को लाइलाज माना जाता था वे भी ठीक हो गए हैं। ऐसे बहुत से मामले विशेष रूप से कैंसर जैसे गम्भीर रोगों के! चिकित्सा विज्ञान में कैंसर के साथ ऐसा ही होता रहेगा जब तक आप लोग इसे पूरी तरह से समझ नहीं लेते। परन्तु सहजयोग में ऐसा नहीं है। एक दम से आप जान जाते हैं कि व्यक्ति भूत–बाधित है। चिकित्सा विज्ञान की दिशा ये बिल्कुल भी नहीं है परन्तु हमारे देश में हमने सदैव इस पर विश्वास किया है। मृत लोगों के विषय में हमारे विशेष नियम हैं कि इनके साथ किस प्रकार व्यवहार करना है? किस प्रकार प्रेत–क्षेत्र में जाना है। सारे मृत शरीरों को समझने के लिए विशेष प्रकार की सूझ–बूझ है, वो किस प्रकार का आचरण करते हैं, कहाँ रहते हैं और मैं सोचती हूँ कि आपके ज्ञान का यह बहुत बड़ा भाग है। बाईं ओर से आने वाली अधिकतर बीमारियों का आप इलाज नहीं कर सकते।

मैं जानती हूँ कि चिकित्सा विज्ञान दाईं ओर को ठीक कर सकता है परन्तु कैंसर को वो टालते चले जाते हैं। कभी एक जगह की शल्य चिकित्सा करते है कभी दूसरी जगह को चीरते– फाड़ते चले जाते हैं। परेशान हो जाते हैं। ये करते हैं वो करते हैं। शल्य चिकित्सा कैंसर को ठीक करने का कोई तरीका नहीं है। ये इसका उपाय नहीं है। आप यदि सहजयोग में कुशल हैं तो आपको इसका आपरेशन नहीं करना पड़ेगा। रातोंरात आप इसको ठीक कर सकते हैं। रातोंरात आसानी से कैंसर के रोगी को ठीक कर सकते हैं। ऐसा करने में वे सामर्थ्य हैं, विशेष रूप से भारतीय लोग क्योंकि भारतीयों में इसकी विशेष योग्यता है। मैं कहना चाहूंगी कि उनपर यह विशेष आशीर्वाद है। आप नहीं जानते ये देश कितना महान है! आप केवल पाश्चात्य शिक्षा के आधार पर कार्य कर रहे हैं। पाश्चात्य लोग अपने अनुभवों में कहाँ पहुँचे? वे इस बात को नहीं समझ पाते। उनके बच्चे नशों में फंस रहे हैं उनके परिवार टूट रहे हैं हर चीज़ उथल–पुथल हो रही है। ऐसा नहीं है कि मैं इस पाश्चात्य शिक्षा की निन्दा कर रही हूँ। बिल्कुल भी नहीं। परन्तु ये शिक्षा पूर्ण नहीं है। आपको इसका दूसरा पक्ष भी जानना है अन्यथा कैंसर अस्पताल न बनाएं। केवल शारीरिक समस्याओं को ही देखें जिन्हें आप ठीक कर सकते हैं। परन्तु यदि आप सभी प्रकार के रोगियों को ठीक करना चाहते हैं तो दूसरी तरफ का ज्ञान भी आवश्यक है। घबराने की कोई बात नहीं, परेशान होने की कोई बात नहीं। परन्तु चिकित्सक होने के नाते आपको यह ज्ञान अवश्य होना चाहिए। मैं सोचती हूँ कि अभी तक भी चिकित्सा विज्ञान अधूरा है। डा. अग्रवाल ने भी यही कहा है। इसमें जो कमी है वह है बाईं ओर के ज्ञान की, जो हमारे पास है।

अब मैं कहूँगी कि यह ज्ञान मैंने पुस्तकों

से प्राप्त नहीं किया, केवल सहजयोगियों पर तथा लोगों पर कार्य करते हुए मैंने इसे पाया। मैंने देखा कि भारतीयों के मुकाबले पश्चिमी लोग इस बाईं ओर से अधिक पीड़ित हैं। परन्तु निश्चित रूप से, अभी भी मैं नहीं समझ पाती कि वे इस तरह बीमार क्यों है! उन्हें क्या हो गया है? मानव हित का, रोग मुक्त करने का कोई अत्यन्त सीमित क्षेत्र भी ले लें तो भी बाईं ओर को आपकी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। मान लो कोई व्यक्ति हर समय रोता रहता है, उदास रहता है, तो ऐसे व्यक्ति को कैंसर हो सकता है। दो प्रकार के लोग हैं–एक जो दाईं ओर के (आक्रामक) हैं तथा दूसरे जो बाईं ओर के (तामसिक) हैं। मैंने देखा है कि जो लोग अत्यन्त आक्रामक प्रवृत्ति हैं, अत्यन्त हावी–होने वाले हैं तथा लोगों पर नियन्त्रण करने वाले हैं, उनके जिगर (Liver) बहुत खराब होते हैं। मैं अवश्य कहूँगी कि उनके ज़िगर बहुत खराब होते हैं। जब वो बहुत आक्रामक होते हैं तो सारी सीमाएं पार कर जाते हैं और इस स्थिति में जो पहली बीमारी उन्हें होती है उसे न तो आप खोज सकते हैं, न ठीक कर सकते हैं। इसमें एक जिगर रोग है। मेरे विचार से डाक्टर जिगर को ठीक नहीं कर सकते। इसके लिए वे प्रयत्न कर सकते हैं परन्तु जिगर को वैसे नहीं ठीक कर सकते जैसे सहजयोगी कर सकते हैं। किसी व्यक्ति का स्वभाव यदि गर्म है तथा वह आक्रामक है तो वह भयानक जिगर रोग का शिकार हो जाता है और सभी प्रकार की जटिलताएं बना लेता है। दायीं ओर के और भी बहुत से रोग हैं, बहुत से–परन्तु इनमें से मुख्य जिगर रोग ही है। जिगर अर्थात जीवन का आधार (Live with)। आपका ज़िगर ही यदि खराब है तो अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति के पास कोई इलाज नहीं। हो सकता है थोड़ा बहुत कुछ हो जाए, परन्तु रोग बढ़ जाने की स्थिति में व्यक्ति मूर्च्छित हो सकता है, उसकी मृत्यु हो सकती है। पश्चिम में जिगर रोग आम बात है और उनके पास इसका कोई हल भी नहीं है। खराब जिगर के साथ ही वे जिए चले जाते हैं, डाक्टर उन्हें बस हस्पतालों में दाखिल कर लेते हैं।

ये रोग लाइलाज नहीं हैं, ये पूर्णतः इलाज योग्य हैं। आपके पास क्योंकि ज्ञान (सहज ज्ञान) नहीं है इसलिए आप इन्हें लाइलाज कहते हैं। नहीं, ये लाइलाज नहीं हैं। मैं अन्य रोगों को दोष नहीं देना चाहती, परन्तु ऐसे बहुत से रोग हैं जिनका पता भी नहीं लगाया जा सकता और न ही चिकित्सा विज्ञान द्वारा इनका इलाज हो सकता है। यह बात आपको स्वीकार करनी होगी कि स्थिति ऐसी ही है। जो चाहे प्रयत्न आप करते रहें परन्तु आप इन्हें ठीक नहीं कर सकते। जितनी चाहें दवाइयाँ बन जाएं, इन्हें ठीक नहीं किया जा सकता। मैं आपको बताना चाह रही हूँ कि बीमारियों की आधी अधूरी बातचीत होती है। उसमें भी बहुत से पहलू छोड़ दिए जाते हैं।

उदाहरण के रूप में दमा (Asthma) रोग को लें। डाक्टर दमा रोग को ठीक नहीं कर सकते। यह सच्चाई है। परन्तु सहजयोग

इसे पूर्णतः ठीक कर सकता है। सहज योग से हम अलर्जी के रोग भी ठीक कर सकते हैं, क्योंकि समस्या की जड़ों का यदि आपको ज्ञान होगा, भेषज सम्बन्धी बातों का नहीं, परन्तु वास्तविक जड़ों का यदि आपको ज्ञान होगा तो आप स्थिति को सम्भाल सकते हैं और रोग ठीक कर सकते हैं।

सहजयोग का अभी तक कोई महा–विद्यालय आदि नहीं है। काश! हम ऐसा कुछ बना पाते। परन्तु सहजयोग हस्पताल हमने बनाया है। बेलापुर नवी–मुम्बई में हमने हस्पताल बनाया है। यहाँ लोगों का इलाज होता है। रोगियों को केवल वहाँ रहने तथा खाने का खर्च देना पड़ता है और मेरे विचार से गरीब लोगों के लिए यह 300 रु. प्रतिदिन से अधिक नहीं है। परन्तु वहाँ रोगी को कोई दवाई नहीं चाहिए और न ही किसी अन्य चीज़ पर उन्हें खर्च करना पड़ता है। क्या आप नहीं सोचते कि हमारे जैसे गरीब देश के लिए यह महत्वपूर्ण है? अन्यथा व्यक्ति को एक्सरे तथा भिन्न परीक्षणों के लिए जाना पड़ता है और परिणाम कुछ भी नहीं निकलता।

व्यक्ति को केवल यह समझ होनी चाहिए कि इसका उपयोग किस प्रकार करना है। मान लो किसी की टाँग गंभीर रूप से प्रभावित है तो आप इसे काट कर नकली टाँग लगा देते हैं। ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

सहजयोग में हमारे यहाँ कुछ डाक्टर हैं, उनमें से कुछ बहुत ही अच्छे हैं, उनमें से कुछ अमरीका के है, कुछ इटली के हैं, कुछ रूस के। रूसी डॉक्टर बहुत ही अच्छे हैं। मेरे विचार से इस शिक्षा (सहजयोग) से परे कुछ भी नहीं है और ये लोग इसे सीखने के लिए प्रयत्नशील हैं। किसी भी प्रकार की सुविधा यदि आप प्रदान करेंगे, उससे मुझे प्रसन्नता होगी परन्तु मैं आपके क्षेत्र में विशेष रूप से दिल्ली में, ग्रेटर नोएडा में, एक सहजयोग अस्पताल शुरु करने का निर्णय कर चुकी हूँ। आपमें से कुछ डॉक्टर यदि हमारा साथ देंगे तो हमारी बहुत सहायता होगी। ग्रेटर नोएडा में एक महाविद्यालय या चिकित्सा विद्यालय आरम्भ करने के विषय में भी मैं सोच रही हूँ। जहाँ हमारे विद्यार्थी तथा डॉक्टर रोगियों का इलाज कर सकेंगे। वहाँ पर इलाज के लिए कोई पैसा नहीं लिया जाएगा। परन्तु यदि लोग आकर वहाँ ठहरेंगे तो उन्हें अपने भोजन आदि के लिए पैसा देना होगा। मात्र इतना ही। अन्यथा मैं इस प्रकार का प्रबन्ध करने वाली हूँ और इस कार्य में जो भी डॉक्टर अपनी सेवाएं अर्पित करना चाहें हम उनकी सेवाओं को स्वीकार करेंगे। मैं नहीं जानती कि वेतन कितना होगा? परन्तु ये बहुत अधिक नहीं होगा। छः सात हजार रुपये प्रतिमाह एक डॉक्टर को दिए जा सकेंगे। डॉक्टर को सहजयोगी होना आवश्यक होगा और सहजयोग की विधियों का ज्ञान भी उसके लिए अनिवार्य होगा। मेरे विचार से ऐसा करना बहुत उदारता होगी क्योंकि हमारे देश में बहुत से लोग इसलिए

दम तोड़ देते हैं क्योंकि न तो वे अस्पताल में दाखिल हो सकते हैं न इलाज करवा सकते हैं। आप लोग यदि मेरी इस परियोजना के लिए कुछ समय दे सकें तो मुझे विश्वास है कि मैं गरीब लोगों के लिए एक अच्छे अस्पताल की व्यवस्था कर सकूंगी। वहाँ पर दैहिक और मनौदैहिक (Somatic and Psychosomatic) सभी प्रकार के रोगी आएंगे और आप लोग भी बहुत कुछ सीखेंगे। क्योंकि यह अत्यन्त सूक्ष्म ज्ञान है। पुस्तकों से इसे नहीं सीखा जा सकता। आपको रोगियों पर प्रयोग करने होंगे और आप हैरान होंगे कि लोग किस प्रकार रोगमुक्त होते हैं। यह किताबी ज्ञान नहीं है। यह तो अत्यन्त व्यवहारिक ज्ञान है और जिन लोगों में दानशील स्वभाव हो वो इस कार्य को बहुत अच्छा कर सकते हैं और बहुत कुछ सीख सकते हैं। एक बात अवश्य मैं आपको बताना चाहूंगी कि सहजयोग में एक बहुत बड़ी बुराई है। सहजयोग में आप पैसा नहीं बना सकते, ऐसा आप यहाँ नहीं कर सकते, पैसा बनाने का प्रयत्न यदि आपने किया तो आप असफल हो जाएंगे। जो भी हो यह धन–व्यापार सहजयोगियों के लिए बहुत दूर की बात है। वे ऐसा नहीं कर सकते। परन्तु आप अपनी सेवाएं दे सकते हैं। बेला पुर अस्पताल में हमारे यहाँ एक बहुत अच्छे सेवा–निवृत डॉक्टर थे उन्होंने बहुत अच्छा कार्य किया। अब वे जीवित नहीं हैं। परन्तु उन्होंने बहुत परिश्रम किया। अब उनकी पुत्रवधु वहाँ कार्य को देख रही हैं। आप यदि सेवा–निवृत्त हैं और यदि आपको बहुत अधिक धन की आवश्यकता नहीं है तथा आपमें कार्य करने की इच्छा है तो यह बहुत अच्छा कार्य है। वहाँ कार्य करने वालों के लिए हम रहने का स्थान तथा भोजन की भी व्यवस्था करते हैं।

यह ज्ञान बहुत कठिन नहीं है परन्तु धन प्राप्ति के लिए इसे नहीं किया जा सकता। जब मैं चिकित्सा विज्ञान पढ़ रही थी तब तक यह क्षेत्र धनसंचालित न था। अब चिकित्सा क्षेत्र बहुत ही धन–लोलुप हो गया है। बड़ा ही अजीब समय है। खेद पूर्वक मुझे कहना पड़ रहा है। परन्तु चिकित्सक लोग बहुत ही धन–लोलुप हो गए हैं। आपके कुछ डॉक्टर अमेरीका गए और वहाँ पर लोगों को खूब बेवकूफ बनाया। वो इस सीमा तक गए कि उनके नाम से हमें शर्मिंदगी उठानी पड़ती है। उनकी तरह से आप पैसा नहीं बना सकेंगे। परन्तु सेवानिवृत्त होकर आप हमारा साथ दें, हमारी सहायता करें। आपमें से कुछ लोग सहजयोग सीखने के लिए आएं। मुश्किल से एक महीने भर में आप इसमें कुशल हो जाएंगे। बिना कोई उपाधि प्राप्त किए आप रोग निदान कर सकेंगे। किसी प्रयोगशाला में जाने की आपको आवश्यकता न होगी। तुरन्त आप जान जाएंगे कि समस्या क्या है और सभी प्रकार की लाइलाज बीमारियों का आप इलाज कर सकेंगे। मैं हैरान हूँ कि ये सब कार्य इतने सुन्दर ढंग से कैसे हो रहा है? ये सारे कार्य और सभी कुछ ये लोग कर रहे हैं क्योंकि मैंने लोगों को रोगमुक्त किया, उनके लिए सभी कुछ किया। परन्तु यहाँ पर हमारा कोई

अस्पताल नहीं है। हम चाहते हैं कि दिल्ली में पहला अस्पताल बने और मैं इस कार्य को कार्यान्वित करना चाहती हूँ। आइए हम इस कार्य को करें। यही धर्मार्थ अस्पताल होगा। यही विवेकशीलता होगी। इसको बनाने के लिए धन मेरे पास है परन्तु मुझे ऐसे चिकित्सकों की आवश्यकता है जो सहायता कर सकें। सहजयोग बहुत ही आश्चर्यचकित कर देने वाली चीज़ है। आप जब आएंगे तो देखकर हैरान होंगे कि ये किस प्रकार कार्य करता है। मैं जानती हूँ कि आप उस स्तर तक कभी नहीं आए। कभी आप परमात्मा से एकरूप नहीं हुए, आपने परमात्मा की शक्ति का कभी प्रयोग नहीं किया। एक बार जब आप इस शक्ति का उपयोग करने लगेंगे तो आप अपने कार्य पर हैरान होंगे।

कहा गया है कि आप स्वयं को पहचानें। परन्तु आत्म साक्षात्कार प्राप्त किए बिना ऐसा कर पाना संभव नहीं है। हमारे देश में आज हमें आत्म–साक्षात्कारी लोगों की आवश्यकता है। सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाएगा। ये सारे लड़ाई– झगड़े समाप्त हो जाएंगे, क्योंकि आप सामूहिक व्यक्ति बन जाते हैं, आपका व्यक्तित्व सामूहिक हो जाता है। न कोई युद्ध होगा न आक्रमण। मैं बहुत से मुस्लिम देशों को जानती हूँ। ऐसे बहुत से मुस्लिम देश हैं जहाँ पर लोग आत्मसाक्षात्कारी हैं– जैसे टर्की, बेनिन, आइवरीकोस्ट–ऐसे सात देश हैं। इन क्षेत्रों के मुसलमानों को सहजयोगी बना दिया गया है। इनमें सभी प्रकार की विचारधाराओं का समन्वय है, मानवीय योग्यताओं की सूझ–बूझ है तथा मानव व्यक्तित्व का सम्मान है। कहने से अभिप्राय ये है कि यहाँ का वातावरण बिल्कुल भिन्न है। भिन्न स्तर की चेतना वहाँ है और जैसे आप कह रहे थे वहाँ पर व्यक्ति अत्यन्त शान्त हो जाता है और मौन होते हुए भी अत्यन्त मधुर होता है।

इस छोटे से भाषण में, मैं नहीं जानती, सहजयोग के विषय में आपको कितना कुछ बताऊं परन्तु यह अत्यन्त चमत्कारिक चीज़ है। कृपया अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने का प्रयत्न करें। इन्होंने मुझसे आत्म–साक्षात्कार देने का अनुरोध किया है। मैंने कहा, "अच्छा मैं प्रयत्न करती हूँ और देखती हूँ कि मैं ये कार्य कर सकूं।

(इसके बाद श्रीमाताजी ने सभी उपस्थित साधकों को आत्म–साक्षात्कार प्रदान किया।)

# ईस्टर पूजा

ईस्तम्बूल – 21.4.2002

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम ईसा–मसीह और उनकी माँ की पूजा करने के लिए यहाँ आए हैं।

संयोग की बात हैं कि ईसा–मसीह की माँ टर्की आई और यहाँ रहती रहीं। क्या ये आश्चर्य की बात नहीं है कि ईसा–मसीह के क्रूसारोपण के पश्चात् वो यहाँ आईं और यहीं रहीं। हो सकता है कि बाद में वो भी उनके पास आए हों! परन्तु लोग कहते हैं कि वो कश्मीर गए और उनकी माँ भी उनके साथ थीं। बिल्कुल संभव है। हो सकता है कि जाते हुए मार्ग में वो यहाँ रुके हों।

तो हम उनकी पूजा करने के लिए यहाँ आए हैं। सहजयोग के अनुसार वे महालक्ष्मी का अवतरण थीं और उन्होंने धर्म के लिए अपने पुत्र का बलिदान कर दिया। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि किसी ने उनका (माँ मेरी) मूल्य नहीं समझा। इस सत्य को किसी ने नहीं देखा कि वे इतनी महान आध्यात्मिक व्यक्ति हैं। केवल सहजयोग के माध्यम से आप समझ सकते हैं कि वे अत्यन्त महान व्यक्तित्व महिला थीं जिन्होंने ईसा–मसीह को जन्म दिया। दुर्भाग्य की बात है कि लोगों ने उनका सम्मान नहीं किया। विशेष रूप से इस्लाम जगत में उनका सम्मान नहीं हुआ। इसी कारण से इस्लामिक संस्कृति में महिला के लिए कोई स्थान नहीं है। उनके विषय में मेरा बहुत कटु अनुभव है। हमने निराश्रय महिलाओं को पुनः स्थापित करने के लिए एक संस्था आरम्भ की है। इस संस्था में जिन महिलाओं के प्रार्थना पत्र आए हैं उनमें से अधिकतर मुस्लिम महिलाएं हैं। अत्यन्त खेद की बात है। मोहम्मद साहब ने कहा कि 'अपनी माँ की देखभाल करें,' इसके बावजूद भी ये सारी महिलाएं जिनके आठ–आठ, दस–दस बच्चे हैं। निःसन्देह हम उन्हें स्थान देंगे। हमें उनकी देखभाल करनी है क्योंकि इन तुच्छ धार्मिक विचारों में हमें कोई विश्वास नहीं। सबसे महत्वपूर्ण तो मानव धर्म है।

हमें इन सभी धर्मों को समीप लाना है। ये बहुत दुष्कर कार्य है क्योंकि मुसलमान–मुसलमानों का सम्मान नहीं करते और इसाई, हिन्दुओं का सम्मान नहीं करते। ये बहुत ही अजीबो–गरीब तरीका चल पड़ा है। वे सब परमात्मा के लिए हैं, परमात्मा के कार्य के लिए और उसके प्रेम के लिए हैं। इसके बावजूद भी कोई सम्मान नहीं है बिल्कुल भी प्रेम नहीं है। इसके विपरीत सभी लोग लड़ रहे हैं, झगड़ रहे हैं और सर्वत्र खून खराबा कर रहे हैं। अत्यन्त खेद की बात है कि परमात्मा और धर्म के नाम पर लोग इतने क्रूर और हास्यास्पद बन गए हैं।

समस्या का एकमात्र समाधान है उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे देना। इसी आत्म–साक्षात्कार को कुरान में मिराज़ (Miraj) कहा गया है, इसे मिराज़ नाम दिया गया है। परन्तु ये लोग कहते हैं कि कोई भी मिराज़ नहीं प्राप्त कर सकता। मोहम्मद–साहब ने इसे प्राप्त किया था उनके अतिरिक्त किसी ने भी नहीं। इन लोगों ने लोगों के आत्म–साक्षात्कार लेने पर रोक लगा दी है। ये बात गलत है। सभी मनुष्य आत्म साक्षात्कार प्राप्त कर सकते है चाहे वो अफ्रीका, इंग्लैण्ड, अमरीका, भारत या किसी अन्य देश के हों। सभी मिराज़ प्राप्त कर सकते हैं। एक बात हमें अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि किसी का भी सृजन इस संसार में लड़ने के लिए, परस्पर लड़ने के लिए नहीं किया गया। पशु भी आपस में नहीं लड़ते। तो क्यों मनुष्यों को परस्पर लड़ना चाहिए और वो भी धर्म के नाम पर!

परमात्मा के नाम पर धार्मिक एकता स्थापित करने के लिए ईसा–मसीह पृथ्वी पर अवतरित हुए। परन्तु ईसाई लोगों ने भी लड़ना और दूसरों पर प्रभुत्व जमाना शुरु कर दिया। ये विशाल विश्व उथल–पुथल से भर गया है। यहाँ पर आदमी परमात्मा और धर्म के नाम पर लड़ रहा है। हमारा धर्म सार्वभौमिक है। एक धर्म है। हम सभी देवी–देवताओं का सम्मान करते हैं– सम्मान ही नहीं करते उनकी पूजा भी करते हैं। हम इतने मूर्ख नहीं कि इस बात को भी न समझ सकें कि सारे देवी–देवता एक हैं। वैसे ही आत्म–साक्षात्कार प्राप्त कर लेने के पश्चात् आप इस बात को महसूस कर लेते है कि ये सभी देवी देवता हमारे मध्य नाड़ी तन्त्र पर विराजमान हैं। वे हमारे चक्रों पर विराजमान हैं। वे इसलिए वहाँ नहीं हैं क्योंकि हमने शास्त्रों में ऐसा लिखा हुआ पढ़ा है। परन्तु वास्तव में ये सच्चाई है। सभी देवी–देवता वहाँ विराजमान हैं और पूरे विश्व के पुनरुत्थान के लिए कार्यरत हैं।

तो ईसा–मसीह का महानतम कार्य पुनरुत्थान है। इस कार्य को करते हुए उन्होंने बहुत कष्ट उठाए। बहुत यातनाओं में से उन्हें गुजरना पड़ा और उसके पश्चात् शरीर सहित उनका पुनर्जन्म हुआ। सहजयोग भी इसी प्रकार से कार्यान्वित है। आप अपना आत्म–साक्षात्कार अर्थात अपना पुनर्जन्म प्राप्त करते हैं आपकी सारी गलत धारणाएं समाप्त हो जाती हैं। आपके अन्दर की सारी मूर्खता लुप्त हो जाती है और आप केवल प्रेम और सूझबूझ से परिपूर्ण हो जाते हैं।

मैं जानती हूँ कि आरम्भ में भारत या किसी भी अन्य देश में ये कार्य करना कठिन था। सर्वत्र मैंने पाया कि लोगों में ज्ञान का पूर्ण अभाव है और वे परस्पर घृणा करते हैं। किसी न किसी बहाने से, किसी न किसी धारणा के अनुरूप या एतिहासिक विचारों के अनुसार वे परस्पर घृणा करते हैं। भारत में तो ये घृणा थी ही, विदेशों में भी इसकी कमी न थी। जैसे हिटलर आया। हिटलर इसलिए आया कि वो मानव से घृणा करता था। वह आसुरी शक्ति थी जो अवतरित हुई और जिसने सभी प्रकार के कुकृत्य किए।

जिस प्रकार से उसने लोगों की हत्या की क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि कोई मनुष्य ऐसा कर सकता है! उसने बच्चों की हत्याएं की। बड़े लोगों को गैस कक्षों में बन्द करके मार दिया और सभी प्रकार के भयानक कार्य किए। मैं जब जर्मनी गई तो उन्होंने मुझे ये सब दिखाना चाहा। मैंने कहा, "मैं नहीं देख सकती, ये सब देखने की शक्ति मुझमें नहीं है परन्तु मेरे पति वहाँ पर गए और जब वो वापिस लौटे तो सात दिनों तक बीमार रहे। ये इतना व्यथित कर देने वाला अनुभव है। इस प्रकार का आचरण, इस प्रकार से लोगों की हत्या करना, किन्ही परिस्थितियों में, किन्हीं धारणाओं के आधार पर किन्हीं गलत विचारों के अनुरूप इस प्रकार हत्याएं करना अत्यन्त अमानवीय है। मैं नहीं जानती कि इस हिटलर को ऐसा कौन सा विचार आया कि वह यहूदियों के पीछे पड़ गया और उनकी हत्या करने लगा। पृथ्वी पर बहुत से कुकृत्य हुए और सभी धर्म के नाम पर हुए, ये सबसे बुरी बात है। शुरू से लेकर अब तंक लोग धर्म के नाम पर हत्याएं करते रहें हैं। धर्म तो व्यक्ति को प्रेम सिखाता है परमात्मा से प्रेम, परस्पर प्रेम। धर्म किस प्रकार घृणा और हत्या सिखा सकता है? मेरा कहने का अर्थ ये है कि कितने आश्चर्य की बात है कि आज भी ये सब मूर्खता हो रही है। केवल सहजयोग ही इस मूर्खता का अन्त कर सकता है? और इसे करना भी चाहिए क्योंकि आखिरकार, हम सब मानव हैं। जैसे ईसा मसीह ने कहा था, ये करने के लिए आपको अपना पुनरुत्थान करना होगा। ये पुनरुत्थान पृथ्वी पर अब सहजयोग के माध्यम से बहुत ही सुगमता से संभव है। मोहम्मद–साहब ने इसे मिराज़ कहा, उन्होंने इसका वर्णन अत्यन्त स्पष्ट रूप से किया परन्तु इसको पाने की इच्छा किसको है? कोई भी मिराज़ नहीं पाना चाहता। कोई यदि उन्हें मिराज़ देने का प्रयत्न करें तो वे उसके पीछे पड़ जाते है और कहते हैं ऐसा करना बहुत ही हास्यास्पद है। उन सबका यही नज़रिया है। सभी ने मानव के अज्ञान के कारण कष्ट उठाए हैं, सभी ने। वे लोग मेरी भी आलोचना करने में लगे हुए हैं। परन्तु मैं बहुत शक्तिशाली हूँ क्योंकि प्रेम अन्य सभी चीज़ों से कहीं अधिक शक्तिशाली है। अब यह पूरे विश्व में कार्यान्वित है। सर्वत्र लोग इस बात को महसूस कर रहे हैं कि इस प्रकार घृणा, अन्य लोगों के विषय में गलत धारणाएं, बहुत ही भयानक हैं। एक बार जब बड़ी संख्या में लोग इसे जान जाएंगे तो मुझे विश्वास है कि ये सब चीज़े समाप्त हो जाएंगी।

हमारे सम्मुख ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं, जिनमें से कुछ तो हाल ही में हुई हैं, कि यदि आप किसी धर्म विशेष का अनुसरण करते हैं या धर्म विशेष को मानते हैं तो लोग आपसे घृणा करते हैं। ये बात मेरी समझ में नहीं आती। आप इस बात की व्याख्या नहीं कर सकते कि ऐसा क्यों किया जाता है? परन्तु ऐसा होता है। हमारा सृजन करने वाले परमात्मा के नाम पर मानव से घृणा करना बहुत ही गलत है। ऐसे लोग परमात्मा

और उनके प्रेम को नहीं समझते। उदाहरण के रूप में ईसामसीह के जीवन पर नज़र डालें। जब उनका क्रूसारोपण हुआ तो वे मुश्किल से तैंतीस वर्ष की आयु के थे। उनकी माँ को इतना कष्ट उठाना पड़ा, क्यों? लोगों ने उन्हें क्रूसारोपित क्यों किया? क्योंकि वे प्रेम की शिक्षा दे रहे थे। प्रेम करने का ये विचार किसी को भी अच्छा न लगा। लोग यदि परस्पर प्रेम ही नहीं करते तो किस प्रकार आप उनकी सहायता कर सकते हैं? किन वायदों के साथ आप अन्य लोगों की सहायता करते हैं? क्योंकि आप प्रेम करते हैं इसीलिए आप अन्य लोगों का आनन्द लेना चाहते हैं और उन्हें समझते हैं। एक बार जब आप अन्य लोगों को प्रेम करने लगते हैं तो ये मिथक समाप्त हो जाता है।

मान लो कि आप किसी ईसाई, मुसलिम या हिन्दू परिवार में जन्में या किसी अन्य में। ऐसी कौन सी चीज़ है जो आपको ये सोचने पर विवश करती है कि आप अन्य लोगों से भिन्न हैं। आप सबके जन्म एक ही प्रकार से हुए, एक ही प्रकार से आपकी माताओं ने गर्भ धारण किया। देखने में आप सब एक जैसे प्रतीत होते हैं। आप सबमें कान, नाक आँखें सभी कुछ समान है। कौन सी चीज़ आपको भिन्न बनाती है? मुझे लगता है कि इस मामले में भी कोई राजनीति है, परमात्मा और धर्म के नाम पर लोगों को एक दूसरे से अलग करने की कोई तुच्छ चाल।

इसके विपरीत सहजयोग का कार्य परमात्मा के नाम पर लोगों को एक करना है, परमात्मा के नाम पर लोगों को परस्पर जोड़ना। मान लो कोई व्यक्ति दक्षिणी अफ्रीका में रह रहा है या बैनिन जैसे किसी दूर–दराज स्थान पर। वे सहजयोगी बन गए हैं। वहाँ पर हजारों लोग सहजयोगी बन गए हैं, वे सब आपके भाई–बहन हैं, आपके अपने हैं। आप यदि वहाँ जाएं तो वो आपसे अपने बच्चों की तरह से, संबंधियों की तरह से प्रेम करेंगे। वे कभी नहीं सोचेंगे कि आप कौन से धर्म से हैं, कौन से पंथ से। कुछ भी नहीं। जिस प्रकार वो परस्पर प्रेम करते हैं, उससें मैं हैरान हूँ। वास्तव में प्रेम मानव का अन्तर्जात गुण है। ये उसका अन्तर्जात गुण है। सभी मनुष्यों को प्रेम का ये खज़ाना, प्रेम की ये सामर्थ्य दी गई है। परन्तु ये सामर्थ्य अब इतनी कम हो गई है, इतनी घट गई है कि इसी सामर्थ्य से लोग परस्पर लड़ते हैं और एक दूसरे की हत्या करते हैं। धर्म के नाम पर लोगों की हत्या करना घोर पाप है। ये बात मेरी समझ से परे है कि किस प्रकार लोग मान लेते हैं कि दूसरों की हत्या करने से वे स्वर्ग में जा सकते हैं। ऐसे लोग तो घोर नर्क में जाएंगे। आजकल ये धारणा निश्चित रूप से कुछ कम हुई हैं परन्तु ये अब भी विद्यमान है। लोग प्रतिदिन इस प्रकार की मूर्खताएं होते हुए देखते हैं फिर भी वे किए चले जा रहे हैं।

हम सहजयोगी इसके विषय में क्या कर सकते हैं, हमें सोचना चाहिए। हमें देखना चाहिए कि जिस धर्म में हमने जन्म लिया है वह क्या है? किसी न किसी धर्म में तो व्यक्ति को जन्म लेना ही है। आप आसमान से तो टपक नहीं सकते। तो जिस भी धर्म में

आप जन्म लेते हैं उससे बंधे हुए होते हैं। आप प्रेम और आनन्द के धर्म से बंधे हुए हैं फिर भी आप रोते–चिल्लाते रहते हैं और युद्ध तथा नाराज़गी का पाठ पढ़ाए चले जाते हैं। ये कैसे हो सकता है! हम मानव हैं पशु नहीं हैं। इस प्रकार से तो कुत्ते भी नहीं करते। तो क्यों हम मानव एक–दूसरे की हत्या करें तथा अपने और अन्य लोगों के जीवन नारकीय बनाएं। आप यदि अन्य लोगों से घृणा करते हैं तो आप भी घृणास्पद हो जाएंगे। क, ख से घृणा करेगा और ख, क से और इस प्रकार पूर्ण मानव जाति और संस्कृति के लिए घृणा ही एकमात्र कार्य रह जाएगा।

सहजयोग आपके लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद है इसने आपके अन्दर सभी देवी देवता प्रदान किए हैं जो कि जागृत हैं और अब आप जानते हैं कि आपका सम्बन्ध विराट से है। आप ये भी जानते हैं कि मूर्खतापूर्ण विचारों से आपका कोई लेना–देना नहीं।

यहाँ आना मेरे लिए बहुत अच्छा है। मैं जानती थी कि वे यहाँ रहे। मैं ये भी जानती थी कि माँ मैरी भी यहाँ रहीं। यहाँ पर माँ मैरी का एक घर है। ये जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि वे यहाँ रहीं। तो मैंने कहा कि हमें अवश्य उनकी पूजा करनी चाहिए। आखिरकार वे ईसा–मसीह की माँ हैं और माँ तो माँ हैं। क्या फर्क पड़ता है कि वो ईसाई हैं हिन्दू हैं या मुसलमान। उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अपने प्रेम के लिए उन्होंने विश्व के लिए और ब्रह्माण्ड के लिए अपने बेटे को बलिदान होने की आज्ञा दे दी। क्या माँ थी! इस विश्व में क्या आपको कोई अन्य ऐसी माँ मिल सकती हैं जो अपने बेटे को क्रूसारोपित होने की आज्ञा दे दे। इतनी साहसिक, प्रेममय और सर्वाभौमिक व्यक्तित्व!

आज हम यहाँ पर हैं, ये संयोग की बात है कि वे यहाँ पर रहीं। वे यहाँ पर क्यों आईं थीं? क्यों वे यहाँ पर आईं। यहाँ रहीं और उनका एक घर यहाँ हैं। अब इस घर को लेकर ही ईसाई लोग एक पंथ चला देंगे। वे मुसलमानों से लड़ेंगे और मुसलमान ईसाईयों से। जो चाहे आप करें लोगों ने तो लड़ना है। परस्पर लड़ना है। लोगों का स्वभाव है। किसी की सहायता करना, एक दूसरे की सहायता करना नहीं, बिल्कुल भी नहीं। ये लोग अत्यन्त अजीबोगरीब एवं घिनौने बनने का प्रयत्न कर रहे हैं।

भारत में ऐसे बहुत से लोग हुए जिन्होंने परस्पर प्रेम करना सिखाया। इसके बावजूद भी भारत के लोग लड़ रहे हैं। भारत में बहुत से सूफी हुए। यहाँ सर्वत्र बहुत से महान सन्त हुए उनमें से कुछ मुसलमान थे कुछ हिन्दू थे! लोग उनके गीत गाते हैं। यहाँ सभी कुछ है परन्तु इन सबकी अलग–अलग पूजा होती है और उनके नाम पर भी लोग लड़ते हैं। लड़ने के लिए वो बहाना खोजते हैं। मैं आपको बताती हूँ कि ये लोग लड़ाके मुर्गों की तरह से हैं। मानवीय गुण, प्रेम एवं स्नेह उनमें नहीं है। आप लोग परस्पर प्रेम का आनन्द लें। यह गुण इनमें समाप्त हो गया है। प्रेम करने की सामर्थ्य समाप्त हो

गई है। कोई व्यक्ति चीन में जन्मा है भारत में या कहीं अन्य इससे क्या फर्क पड़ता है वह मानव है और उसमें भी प्रेम करने का सामर्थ्य है। आपमें भी प्रेम करने की योग्यता होनी चाहिए।

मेरा अनुभव भिन्न है। मैं अपने पति के साथ चीन गई उन दिनों चीन के लोगों के मन में भारतीयों के प्रति अच्छी भावनाएं न थीं। मैं नहीं जानती क्यों? परन्तु मेरे प्रति वो इतने करुणामय थे कि आप विश्वास नहीं करेंगे। उनका व्यवहार मुझसे इतना अच्छा था कि सभी लोग हैरान थे कि "क्या बात है" ये लोग आपके प्रति इतने विनम्र क्यों हैं? चीन में भारतीयों को पसन्द नहीं किया जाता। मैंने कहा यह बात मिथ्या है। चीनी लोगों में मैंने कभी ऐसी कोई बात नहीं देखी। मेरे प्रति ये लोग अत्यन्त–अत्यन्त सम्मानमय हैं। मैंने इनके लिए क्या किया है? कुछ भी नहीं। आप लोग हैरान होंगे कि एक होटल में मेरी एक पायल गिर गई–चाँदी की। वहाँ से मैं एक बहुत दूर स्थान पर चली गई थी। उन्होंने ये पायल लिफाफे में डालकर मुझे भेजी। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं! इतनी दूर–मेरी आँखों से आँसू झरने लगे और मैंने कहा 'चीन के ये लोग भी अत्यन्त प्रेममय हैं।'

मैं अपने कार्यक्रम के लिए गई थी। वहाँ पर महिलाओं का एक सम्मेलन था। मैं नहीं जानती क्यों परन्तु हवाई अड्डे पर केवल चीनी लड़के आए हुए थे। उन्होंने मेरा सारा सामान उठाया। मुझे आने में देर हो गई थी, सम्मेलन दस बजे आरम्भ होना था और मैं साढ़े–आठ बजे वहाँ पहुँची। उन्होंने मुझे कार में बिठाया, मेरा सामान भी उसमें डाला और कहा मुझे सीधे सम्मेलन में जाना होगा। मैंने कहा 'ठीक है।' मैं वहाँ गई। इस थोड़े से समय में ही ये लड़के मुझसे वास्तव में प्रेम करने लगे थे। जब सम्मेलन समाप्त हुआ तो ये लोग बाहर मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे, क्या आप इस पर विश्वास करेंगे? चीन के वही लोग जो भारत विरोधी हैं! और तब इसके पश्चात् मैं रुकी नहीं। वे दो कारें लेकर आए एक मेरे लिए और एक मेरी पहिया कुर्सी (Wheel Chair) के लिए। और वो मुझे वहाँ के सर्वोत्तम विपणन केन्द्रों पर ले गए, परन्तु मैंने कहा, "आप क्या करोगे? कहने लगे, "हम आपकी पहिया कुर्सी को ऊपर लेकर चलेंगे।"

आप इसकी कल्पना कर सकते हैं। वो मेरे सम्बन्धी न थे। इससे पूर्व मैंने उन्हें कभी न देखा था। उनमें से एक ने कहा, "श्रीमाताजी मैं कल नहीं आ सकूंगा।" मैंने कहा, "क्यों?" कहने लगा, कल मेरा विवाह है।" मैंने पूछा, "आज सारा दिन तुम यहाँ क्या करते रहे?" कहने लगा, "मुझे आपके साथ रहने में बहुत आनन्द आया।" मैंने कहा, "मैं तो वृद्ध महिला हूँ–आप लोग युवा है 'नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। मैंने आनन्द लिया। मैं अपनी दुल्हन भी आपसे मिलवाने के लिए लाऊंगा।' मैं आपको बताती हूँ कि मेरी आँखों में आँसू आ गए। मैंने कहा इतना प्रेम और इतनी करुणा! मैंने उनके लिए कुछ भी नहीं किया था, कुछ भी नहीं, कोई पैसा

भी मैंने उन्हें नहीं दिया था। हे परमात्मा! अन्त तक उन्होंने मुझपर बहुत ध्यान दिया और वो अत्यन्त युवा लोग थे। सभी पच्चीस वर्ष से कम आयु के। अपने हाथों से वे मेरी पहिया कुर्सी को तीन मंज़िलों तक ले गए मैंने कहा, "ऐसा मत करो। मैं ये सब नहीं चाहती।" कहने लगे, "नहीं, नहीं, नहीं नहीं हम चाहते हैं कि आप ये सब देखें, हम चाहते हैं कि आप आएं।" मैंने पूछा, "क्यों?" उन्होंने उत्तर दिया कि यह उन सबके हित में होगा।' मैं नहीं जानती कि उन्होंने किस प्रकार ये बात सोची? वे इतने उन्नत लोग हैं। प्रेम से आप ज्योतिर्मय हो उठते हैं। प्रेम से व्यक्ति को सूझ–बूझ प्राप्त होती है। आपके अन्दर इतना गहन प्रेम विद्यमान है।

राजनीतिज्ञ आकर आपको एक कहानी सुनाते हैं। कोई अन्य आकर आपको कहेगा कि आओ युद्ध करो आदि–आदि। जर्मनी में इसी प्रकार हुआ। युवा–वर्ग को भड़काया गया, परन्तु अब वो परिवर्तित हो रहे हैं। इस पूरे विश्व को परिवर्तित होना होगा क्योंकि यह बहुत कष्ट उठा चुका है। ये धर्म नहीं है, यह सन्तों की शिक्षा नहीं है। यह असुरों की शिक्षा है जो घृणा करना सिखाती है, ये निकृष्टतम चीज़ है। कहने से अभिप्राय है कि प्रेम का आनन्द, स्नेह का आनन्द, आप नहीं समझते।

आजकल आप देखते हैं कि चर्चों आदि में समस्याएं हैं। मैं नहीं समझ पाती, मूर्ख लोग! उन्होंने बहुत से कानून बनाए हैं, उन कानूनों के बावजूद भी या जो भी कारण हो बेचारे बच्चे कष्ट उठा रहे हैं। लोगों में पावन प्रेम का विवेक ही नहीं है। लोग नहीं जानते कि पावन प्रेम क्या है? प्रेम तो मानव का अन्तर्जात गुण है, उनकी अन्तर्जात सम्पदा है। परन्तु अब भी वे नहीं जानते कि किसी से पावन प्रेम किस प्रकार करना है। ये सब अत्यन्त कष्टकर है। मानव को ऐसा बनना शोभा नहीं देता, पशु भी ऐसे नहीं होते। परन्तु मानव तो अति की सीमा तक जा सकता है। सौन्दर्य का पूरा वैभव, सृजनात्मकता की पूरी सम्पदा, कला की पूरी दौलत, कलात्मक स्वभाव, जीवन का आनन्द देने वाली सारी सम्पदा समाप्त हो गई है।

आप अगर लड़ाकू मुर्गे हैं तो आप कुछ भी नहीं देख सकेंगे। किसी चीज़ में अच्छाई आप नहीं देख सकेंगे, किसी भी चीज़ में नहीं। लोग दूसरे लोगों से लड़ते हैं और फिर आपस में भी लड़ते हैं। ये सच्चाई है। वो कहते हैं, "हमें लड़ना ही चाहिए। ठीक है, लड़ो। परन्तु वो आपस में भी लड़ते हैं। अपने भाई बहनों को सताते हैं। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि वे किसी से प्रेम नहीं करते उन्हें किसी से प्रेम नहीं है। ये मुख्य चीज़ है। धर्म का नाम क्यों लें? धर्म ने क्या किया है? किस प्रकार वे इसे सीख पाए? और फिर अपनों से ही घृणा करने की शिक्षा देने लगे। ये बात केवल ईसाईयों, हिन्दुओं मुसलमानों में ही नहीं है परन्तु सर्वत्र मानव इतना गन्दा, इतना घिनौना बन गया है। कहते हैं ये कलियुग है। मेरी समझ में नहीं आता, अपने प्रेम की शक्ति आप किस प्रकार खो सकते हैं?

ईसा–मसीह ने भी इसी के बारे में बात

की, उन्होंने स्पष्ट रूप से प्रेम की बात की। उन्होंने कहा, "अपने पड़ोसी को भी वैसे ही प्रेम करो जैसे स्वयं को करते हो। क्या आपको कभी कोई ऐसा व्यक्ति मिला? नहीं, ऐसे लोग नहीं मिलते। ईसा–मसीह को मानने वाले ईसाईयों ने क्या किया? मोहम्मद साहब को मानने वाले मुसलमानों ने क्या किया? और श्री राम को मानने वाले हिन्दुओं ने क्या किया? क्या वे किसी तरह से अपने अवतरणों के समीप भी आते हैं? क्या वे किसी प्रकार से इन दैवी अवतरणों के समीप भी हैं? कहीं नहीं–मैं उन्हें दोष नहीं देती–कारण ये है कि उन्हें आत्म साक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ है। उन्होंने अपनी आत्मा का ज्ञान नहीं पाया। बिना आत्म साक्षात्कार प्राप्त किए आप कुछ भी नहीं समझ सकते। किसी भी प्रकार का आनन्द आपको समझ नहीं आ सकता। कहने का अर्थ ये है कि आप यदि जर्मनी जाएं तो वहाँ जाकर आप वो सारी चीजें नहीं देख सकते जो उन्होंने की हैं। आपमें यदि थोड़े से भी मानवीय गुण बाकी हैं तो आप बेहोश हो जाएंगे। जापान में जाकर आप देखें कि हिरोशिमा का इन्होंने क्या हाल किया है? हे परमात्मा, मैं सहन न कर सकी और थर–थर काँपने लगी। मैंने कहा, "मानव इतना क्रूर किस प्रकार हो सकता है? भयानक! अब वह समय आ गया है कि ये लोग अपने बच्चों की ही हत्या कर रहे हैं।

यह पराकष्ठा है। दूसरी ओर सहजयोग है जिसमें आप मानव को इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि वो मानव हैं, इस युग में वो आपके साथ जन्में हैं। आपको एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए, एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए, यह मुख्य चीज़ है। यह गुण यदि आप अपने अन्दर विकसित कर लें तो आप अत्यन्त शक्तिशाली सहजयोगी बन जाएंगे और परमात्मा भी आपकी सहायता करेंगे, आपको आशीर्वादित करेंगे। परमात्मा आपकी सहायता करेंगे। यदि आप प्रेममय व्यक्ति हैं तो वे आपको सभी प्रकार की कठिनाइयों, कष्टों और तूफानों से निकाल लेंगे। कलियुग का यही आशीर्वाद है, इससे पूर्व कभी ऐसा न हुआ था।

आप यदि प्रेममय व्यक्ति हैं तो परमात्मा सभी नियमों को तोड़कर भी आपकी सहायता करेंगे, आपकी समस्याओं का समाधान करेंगे और उन लोगों को दण्ड देंगे जो आपको कष्ट देते हैं। यह मेरा निजी अनुभव है। मैं कुछ नहीं करती, किसी को दोष नहीं देती, लड़ाई नहीं करती, चिल्लाती भी नहीं, स्वतः सभी कुछ होता है। परमात्मा से भी मैं कुछ करने को नहीं कहती। मैं कहूँगी कि परमात्मा तो महानतम व्यक्तित्व हैं, वे ही सारा न्याय करते हैं। परमात्मा के प्रेम के पथ–प्रदर्शन में किसी को कष्ट नहीं हो सकता, ये मेरा आश्वासन है। कलियुग का ये आशीर्वाद है। मैं मानती हूँ कि कलियुग भयानक है, लोग भयानक हैं, सभी कुछ है परन्तु एक बात है कि परमात्मा बहुत सावधान हो गए हैं, इससे पूर्व कभी ऐसा न था। ईसा–मसीह ने यदि इस समय जन्म लिया होता तो उन्हें क्रूसारोपित न किया जा सकता। कलियुग में जन्म न लेने के कारण

ही ऐसा हुआ। हमारे लिए यह बहुत बड़ा आशीर्वाद है। किसी को भी सताया नहीं जा सकता। बस आपको विनम्र व्यक्ति बने रहना होगा। आपका चरित्र अच्छा होना चाहिए और आपका व्यक्तित्व प्रेममय होना चाहिए। बस। प्रेममय व्यक्तित्व का आप आनन्द लेंगे, अपने प्रेममय व्यक्तित्व के कारण आपको आशीर्वाद प्राप्त होंगे। कहने का अर्थ है कि जिस प्रकार परमेश्वरी आपकी देखभाल करती है, लोग मुझे बताते हैं कि बहुत से चमत्कार होते हैं। मैं हैरान नहीं हूँ, क्योंकि मैं जानती हूँ कि परमात्मा उन मानवों के प्रति बहुत सावधान हो गए है जो अच्छे हैं, भले हैं। वे उनकी देखभाल करेंगे, उन्हें आश्रय देंगे, उनके लिए सभी कुछ करेंगे। आश्चर्य की बात है कि वे इतने सावधान हो गए है। मोहम्मद साहब को बहुत कष्ट उठाने पड़े, सभी को बहुत कष्ट उठाने पड़े। परन्तु अब ऐसा नहीं है। अब सहजयोगियों को कष्ट नहीं उठाने पड़ेंगे, मैं इस बात का आश्वासन देती हूँ। परमात्मा स्वयं उनकी देखभाल कर रहे है। उनकी हर चीज़ की देखभाल हो रही हैं। मैं आपको बताती हूँ कि विश्व भर से असंख्य पत्र लिखे गए कि किस प्रकार उन्हें आश्रय प्रदान किया गया, किस प्रकार उनकी सहायता की गई। जिस प्रकार से उनकी रक्षा की गई, वह आश्चर्य–जनक है। अतः हमें स्वयं पर विश्वास करना होगा और वास्तव में लोगों को प्रेम करना होगा। विनम्र होकर हमें प्रेम करना होगा। यह प्रेम जीवन पर्यन्त आपकी सहायता करेगा। यह ईसा–मसीह का संदेश है। ईसा–मसीह ने कहा था, "उन्हें क्षमा कर दो।" कितने प्रेम पूर्वक उन्होंने यह बात कही परन्तु लोग नहीं जानते कि वो क्या कर रहे हैं। अत्यन्त प्रेमपूर्वक ईसा मसीह ने उन लोगों के लिए याचना की जिन्होंने उन्हें क्रूसारोपित किया। उन्होंने कहा, "हे परमात्मा, कृपा करके उन्हें क्षमा कर दें क्योंकि वो नहीं जानते कि वो क्या कर रहे हैं।" ईसा मसीह के इस प्रेममय चरित्र की क्या आप कल्पना कर सकते हैं?

आज जब हम उनका उत्सव मना रहे हैं और उनकी पूजा कर रहे हैं तो हमें अपने अन्दर उस चरित्र की पूजा करनी चाहिए कि हम प्रेममय लोग हैं। हम परस्पर प्रेम करते हैं। विश्व भर में सहजयोगी परस्पर प्रेम करते हैं। हो सकता है एक दो ऐसे लोग भी हों जो अच्छे न हों परन्तु अधिकतर, 90%, सहजयोगी प्रेम करते हैं।

इसके लिए मैं आपको आशीर्वाद देती हूँ। आज के दिन परमात्मा आप पर और आपके अन्दर विद्यमान प्रेम शक्ति पर अनन्त आशीर्वाद की वर्षा करें। प्रेम की यह शक्ति आपमें होनी चाहिए। यह आपके जीवन को पूर्णतः परिवर्तित कर देगी और आप इतने शक्तिशाली व्यक्तित्व, अत्यन्त शक्तिशाली सहजयोगी बन जाएंगे। प्रेम की सूझ–बूझ यदि आप अपने अन्दर विकसित कर लेंगे तो आप अनगिनत चमत्कार कर सकेंगे।

**परमात्मा आपको धन्य करें।**

# सहस्रार पूजा

**कबैला – 5.5.2002**

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सहस्रार उत्सव मनाने के लिए–सहस्रार की पूजा करने के लिए आज का दिन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज के दिन यह अत्यन्त अद्वितीय कार्य हुआ था कि आपके सहस्रार खोले गए। विश्व भर में बहुत थोड़े से लोग थे–कुछ सूफी थे, कुछ सन्त थे और चीन में भी कुछ लोग थे, बस। परन्तु उनमें से भी बहुत कम लोगों के सहस्रार खुल पाए। अतः उन्होंने जो कुछ भी कहा या लिखा उसे लोग समझ नहीं सके। उन्हें वास्तव में कष्ट दिए गए, उन्हें क्रूसारोपित किया गया, और सभी प्रकार के कष्ट उन्हें दिए गए क्योंकि लोग उनके आत्म–साक्षात्कार प्राप्ति को सहन न कर सके। अतः आज का दिन बहुत महान है क्योंकि इस दिन सामूहिक रूप से सहस्रार खोला गया। आप सबने इसे प्राप्त किया। विश्व भर में भी आपके पास बहुत से लोग हैं जिनके सहस्रार खुले हैं। निःसन्देह ये समझने के लिए कि सामूहिक सहस्रार खोलने की ये महान घटना क्या है हमें अभी भी बहुत से और लोगों की आवश्यकता है। आत्म साक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् इनमें से कुछ लोग बहुत उन्नत हो गए हैं। बहुत अधिक। उनमें से कुछ ने सहजयोग को भली–भांति समझ लिया है और उनमें गहनता बहुत विकसित हुई तथा उनकी चेतना वास्तव में परमात्मा से समग्रता या एकाकारिता की महान चेतना है।

परमात्मा से एकाकारिता प्राप्त कर लेना मानव के लिए महानतम आशीर्वाद है। अभी तक वे लोग मानवीय अस्तित्व के निम्न स्तर पर थे। उस निम्न स्तर की सभी समस्याएं उनके साथ थीं जैसे ईर्ष्या, घृणा आदि तथा समकालीन युग की अन्य सभी समस्याएं जैसे युद्ध, अन्य लोगों को कष्ट पहुँचाना और प्रेम करने के स्थान पर अन्य लोगों को कष्ट देना। ये सभी समस्याएं बनी हुई थीं क्योंकि उनके सहस्रार अभी तक खुले न थे।

अतः हमारा मुख्य कार्य विश्व भर के लोगों के सहस्रार को खोलना है। यह कार्य अत्यन्त सरल है और इसे आप कर सकते हैं तथा सामूहिक रूप से यदि आप इस कार्य को करेंगे तो यह और बेहतर कार्यान्वित होगा। आप यदि सामूहिक हैं तो इसे बहुत ही अच्छी तरह से कार्यान्वित कर सकते हैं।

सहजयोग में इसी प्रकार के बहुत से लोग आए जिनके सहस्रार पूरी तरह से खुले हुए हैं और जो अपनी गहनता को महसूस करते हैं। सर्वप्रथम आपको अपनी गहनता को महसूस करना है। अपनी गहनता को यदि आप महसूस नहीं करते, आप यदि अपने व्यक्तित्व से, जो कि बहुत गहन है, एकरूप नहीं हैं, तो आप आत्मसाक्षात्कार का आनन्द नहीं उठा सकते।

सर्वप्रथम आप स्वयं को समझें। आप यदि स्वयं को ही नहीं समझ सकते तो किस प्रकार आप अन्य लोगों को समझ सकते हैं। अन्य लोगों को आप नहीं समझ सकते। अतः सर्वप्रथम सहस्रार का पूरी तरह से खुलना आवश्यक है। पूरी तरह से, मेरा अभिप्राय है, परमात्मा से पूर्ण एकाकारिता। यह कार्य कठिन नहीं है। आपको केवल थोड़ी सी ध्यान धारणा करनी है और यह कार्यान्वित हो जाएगा। मुझे देखकर प्रसन्नता होती है कि बहुत से लोगों में यह कार्यान्वित हो चुकी है। सहजयोग में ऐसे लोगों से मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है जिन्होंने गहन सामूहिकता और आत्मसाक्षात्कारी मानव की चेतना को प्राप्त कर लिया है।

आत्म-साक्षात्कारी व्यक्ति की चेतना क्या है। आज हमें यही बात समझनी है। जैसा मैंने कहा, आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। चेतना इस प्रकार की है कि अब आपको यह बात समझ लेनी चाहिए कि विश्व में क्या हो रहा है और इसमें आप किस प्रकार से सहायता कर सकते हैं। चेतना की स्थिति तक पहुँचने में आप लोगों की कैसे मदद कर सकते हैं। जब तक आपमें अपने विषय में पूर्ण ज्ञान, पूर्ण शक्ति और आत्म विश्वास नहीं है, इसके बिना आप कार्य नहीं कर सकते।

सहस्रार दिवस परमात्मा से आपके सम्बन्धों को दृढ़ करने के लिए मनाया जाता है ताकि आपकी चेतना ज्योतिर्मय हो जाए और आप सभी चीजों में सत्य को देख सकें बहुत से देशों में मैंने देखा है कि लोगों ने बहुत तीव्रता से सहजयोग अपना लिया। आश्चर्य की बात है कि अफ्रीका, जिसे विकसित देश नहीं माना जाता, वहाँ भी यह बहुत अच्छा चल रहा है। वहाँ पर हजारों लोगों ने आत्म-साक्षात्कार प्राप्त कर लिया है। विकसित देशों के लोग, मेरे विचार से, उत्थान प्राप्ति की स्थिति से परे पहुँच गए हैं। यही बात हो सकती है! उन्हें अपनी विकसित अवस्था से इस अवस्था तक वापिस आना होगा जहाँ वे उन्नत हो सकें। यही कारण है कि जिन लोगों को आत्म साक्षात्कार प्राप्त हो चुका है वो भी उतनी तेजी से उन्नत नहीं हो रहे हैं जितनी तेजी से वो लोग उन्नत हो रहे हैं जो अभी इतने अधिक विकसित और आधुनिक नहीं हैं। फिर भी सहजयोग कार्यान्वित हुआ। बहुत से लोगों में यह कार्यान्वित हुआ और उन्होंने भली-भांति अपने उत्थान को प्राप्त किया है।

परन्तु मैं कहूंगी कि जब आप ध्यान धारणा करते हैं तो बाह्य में भी आपको साक्षी भाव विकसित करने का प्रयत्न करना चाहिए। आपको ये पता लगाने का प्रयत्न करना चाहिए कि मामला क्या है, क्या कमी है। अन्य लोगों में क्या कमी है और किस प्रकार आप इसमें सहायता कर सकते हैं। केवल अपनी चैतन्य लहरियों द्वारा आप अपने देश की, अपने परिवार की, सर्वत्र अपनी कमियों को सुधार सकते हैं।

अब जैसे आप देख रहे हैं सहजयोग बढ़ रहा है और आत्म साक्षात्कार प्राप्त करने की तीव्र इच्छा भी है और आवश्यकता भी।

आपके हृदय में लोगों के लिए केवल प्रेम एवं सूझ–बूझ की भावना होनी चाहिए। ये लोग अज्ञानान्धकार से आ रहे हैं और इन्हें परमेश्वरी तत्वों और प्रकृति में प्रवेश करना है और यह उनके लिए अत्यन्त शुभकर हो सकता है। अतः शनैः शनैः यदि आप उनके प्रति प्रेम एवं सुहृदयता की भावना विकसित कर लें तो मुझे विश्वास है कि आप उनकी उन्नति के लिए बहुत कुछ कर सकेंगे। उनपर क्रोध करने का कोई लाभ नहीं क्योंकि वे अज्ञानी हैं। नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। ईसा–मसीह ने कहा था, "वो नहीं जानते कि वो क्या कर रहे है।"

आपने उन्हें समझाना है कि जो भी कार्य वो कर रहे हैं, जो भी कुछ वो समझ रहे हैं, उसमें अभी बहुत कमियाँ है। अभी तक यह पूर्ण विस्तृत नहीं है जितना ये हो सकता था। यदि वे आत्म–साक्षात्कारी होते आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् भी मैं देखती हूँ कि लोगों के साथ समस्या बनी हुई हैं। बीते हुए, मृत, पूर्वजन्म की समस्याएं अब भी उनके साथ हैं। वो इन्हें बनाए रखते हैं और चेतना का इतना सारा प्रकाश भी ये नहीं दर्शाता कि उनमें क्या कमी है।

उदाहरण के रूप में अहम् को ही लें। यह बहुत अधिक विकसित है। पाश्चात्य देशों में लोग जितने विकसित हुए हैं उतना ही अहम् भी विकसित हुआ है। उन्हें ये पता लगाना होगा कि उनमें क्या कमी है? अहंकार का उद्गम इस धारणा से होता है कि, 'तुम कुछ महान हो, तुम ये हो, तुम वो हो, तुम्हारे माता–पिता भी बहुत महान थे, तुम्हारे पास विशाल सम्पदा है या तुम बहुत उच्च पद पर हो' आदि–आदि। किसी भी चीज से अहं आ सकता है और अहं का ये भाव आपकी चेतना के विरुद्ध है क्योंकि ये सत्य नहीं है। आप कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे बाह्य चीजें बना रही हैं परन्तु अपने अंतःस्थित चेतना द्वारा ही आप बनाए गए है। इस चेतना का बढ़ना ही आवश्यक है। कहाँ से? ये बात समझी जानी आवश्यक है कि किस प्रकार हमें अहं आता है और किस स्रोत से।

कल मैंने महसूस किया कि बहुत से लोग ऐसे थे जिन पर दाईं ओर (आक्रामकता) का प्रकोप था। आक्रामकता का कोई लाभ नहीं। ये आप के लिए समस्याएं उत्पन्न करेगी, बीमारियाँ उत्पन्न करेगी और आक्रामक सहजयोगी बनाने का भी कोई लाभ नहीं है।

अतः मुख्य चीज प्रेम की शक्ति को समझना है। प्रेम की शक्ति महानतम है और सर्वोच्च है और यदि किसी तरह से आप अपना क्रोध त्याग सकें, लालच और अहं को छोड़ सकें, ये कार्य यदि आप कर सकें तो आप सहस्रार में पहुँच सकते हैं। अब आप अहं का खेल देखें। ये आपकी उत्क्रान्ति को रोक लेता हैं। अहं के कारण ही लोग खो जाते हैं क्योंकि अहं के बिन्दु पर आकर वे या तो बाएं को चले जाते हैं या दाएं को। या वे दाईं ओर की अति में चले जाते हैं या बाईं ओर की। इन दोनों पक्षों में से किसी एक की अति में वे चले जाते हैं।

अतः सर्वप्रथम हमें अपना अहं ठीक करना होगा। इसे ठीक करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? इसके लिए हमें स्वयं को

देखना चाहिए ओर स्वयं पर हँसना चाहिए। हमारे अन्दर कैसा अहं है? किस चीज़ का? हम मानव हैं, अब हम दिव्य बन गए हैं। हमारे अन्दर की इस दिव्यता के साथ, इस प्रकाश के साथ हमें ये समझना है कि हम परमात्मा के अंग–प्रत्यंग हैं, प्रेम के सागर की एक बूँद मात्र हैं। आप यदि अपने अहं को घटा सकें, मानवीय विवेकशीलता के स्तर पर इसे ला सकें तो यह बेहतर कार्यान्वित होगा।

मैं देखती हूँ कि पश्चिम में ये अहं बहुत शक्तिशाली है, बहुत ही सशक्त है। और जो भी कुछ गलत वो करते हैं, वो समझते हैं कि ये ठीक है, क्योंकि अहं इस कार्य में व्यक्ति को हर तरह से बढ़ावा देता है। इसके विपरीत जिन देशों के लोग अब विकसित हो रहे हैं जो अभी तक विकसित नहीं हो पाए हैं, वहाँ पर लोगों की समस्या अहं नहीं है, उनकी समस्या प्रति अहं है। वह भी ठीक हो सकता है। परन्तु **अहं आपका शत्रु है जिसका सृजन आपने स्वयं किया है।** अतः आपको इससे लड़ना होगा और स्वयं देखना होगा कि इसका स्रोत क्या है। हो सकता है कि इसका उदगम, देश से हो, परिवार से हो या कहीं और से। अतः सबसे पहले हमने अहं को देखना है ताकि हम सहस्रार में प्रवेश कर सकें।

जब मैं सामूहिक रूप से सहस्रार खोलने के कार्य में लगी हुई थी तो मैने पाया कि लोगों का अहं मुझे नीचे की ओर खींच रहा था। मुझे लोगों के अहं से लड़ना पड़ा क्योंकि मैं अत्यन्त सीधी–सादी आदतों वाली, अहं विहीन महिला हूँ। इसलिए लोग मुझे दबाया करते थे। सभी प्रकार की उल्टी सीधी बातें मुझे कहते थे। परन्तु मैंने उन्हें समझ लिया कि उनके साथ अहं की समस्या है। एक बार जब यह अहं विकसित हो जाता है और व्यक्ति पर छा जाने का प्रयत्न करता है तो इस देश में हम बहुत से हिटलर खड़े कर सकते हैं और विश्व भर में बहुत से भयानक लोग बना सकते हैं।

अतः समझने वाली पहली बात ये है कि जिन लोगों में अहं है उन्हें हमें कभी दबाना नहीं चाहिए। निःसन्देह आपको उनसे लड़ाई नहीं शुरु कर देनी चाहिए। आपको स्वयं पर विश्वास करना चाहिए कि आप ही वो लोग हैं जिन्हें आत्म साक्षात्कार प्राप्त है। आप उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं। मेरी शक्तियाँ केवल तभी कार्य करती हैं जब आप लोग आत्म–साक्षात्कारी हों। आप हैरान होंगे कि ये शक्तियाँ ऐसे बहुत से कार्य करती हैं जो अहंकार ग्रस्त व्यक्ति नहीं कर सकते।

उस दिन अफ्रीका में मैंने सुना कि लोग अचानक अदृश्य हो जाते हैं। वहाँ पर सैनिक विद्रोह हुआ और वहाँ का राष्ट्रपति सहजयोगी था, वह अदृश्य हो गया। कोई उसे खोज न सका क्योंकि वो लोग अत्यन्त समर्पित हैं। वे इतने अधिक समर्पित हैं कि उन्हें मेरी शक्तियों का लाभ प्राप्त होता है। आप सबको चाहिए कि मेरी शक्तियों का, मेरी सुरक्षा का उपयोग करें। रक्षा करने वाली शक्ति बहुत दृढ़ है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो पूर्णतः सहजयोग में

स्थापित हैं। अतः सर्वप्रथम स्वयं पर पूर्ण विश्वास करें कि आप सहजयोगी हैं– आप अहं नहीं हैं। सहजयोगी का अर्थ है कि आप अहंकार नहीं कर सकते। अहंरूपी यह दुर्गुण भिन्न स्रोतों से आया है। इस बात को आप जानते हैं। परन्तु इसका शुद्धीकरण होना चाहिए, वैसे ही जैसे जब नदी बहती है तो सभी प्रकार की गंदगी, कूड़ाकरकट इसमें बह जाता है। जब यह समुद्र में मिलती है तो यह समुद्र बन जाती है। इसी प्रकार से आपको भी बनना है। **सागर बनने के लिए आपको अपने अन्दर पड़ने वाली सभी सरिताओं को भूलना होगा। उन सभी गलत धारणाओं को भूलना होगा जो आपमें आ रही थीं।** किसी भी स्रोत से इन धारणाओं का आरम्भ हो सकता है। मैं नहीं जानती कि किस प्रकार इन्हें कोई नाम दूं क्योंकि इन स्रोतों की एक बहुत बड़ी सूची है। कई बार तो अहं के कारण लोग पगला जाते हैं।

अतः **मुख्य चीज़ अपने अहं को देखना और उसका साक्षी होना है कि किस प्रकार यह कार्य करता है, किस प्रकार आपके स्वभाव को बिगाड़ता है, किस प्रकार आपको मूर्ख बनाता है?** पहला कार्य जो अहं करता है वह है व्यक्ति को मूर्ख बनाना। व्यक्ति इस प्रकार से आचरण करने लगता है कि लोग सोचते हैं ओह! तुम पृथ्वी पर जीवित सबसे बड़े मूर्ख हो।" परन्तु इसका कोई लाभ नहीं, क्योंकि यदि लोग विश्वस्त हो जाएंगे कि आप मूर्ख हैं तो क्या होगा। इसके विपरीत आपमें यदि विवेक है, आपमें यदि शान्ति है, जीवन की हर चीज का आनन्द लेने का विशेष स्वभाव यदि आपमें है, आपमें यदि सामूहिक स्वभाव है तो यह कार्य करेगा। सभी लोग प्रभावित हो जाएंगे। क्योंकि उस प्रकाश में वे अपनी मूर्खता अपना असत्य अपने सभी दुर्गुण देख सकेंगे और महसूस करेंगे कि जो वो सोचते हैं वह ठीक नहीं है। यह व्यक्ति मुझसे कहीं गहन है। जो इसके पास है वह मेरे पास नहीं है। हम सबके लिए यह मुख्य चीज है।

सहजयोग में हमारे यहाँ कुछ लोग हैं जो अगुआ (Leader) हैं। इसका मतलब ये नहीं कि वो वास्तव में लीडर बन बैठें। इसका अर्थ ये है कि उनमें गहनता बहुत अधिक हो। गहनता यदि उनमें नहीं होगी तो वो बाहर चलें जाते हैं। उनमें यदि गहनता है केवल तभी वो लीडर हैं। **गहनता अर्थात लोग उन्हें देखें और वास्तव में आनन्द लें, उनकी उपस्थिति का वास्तव में आनन्द लें।** अतः हर चीज़ आप स्वयं देख सकते हैं। अगुआओं के लिए मैं विशेष रूप से ये कहूंगी क्योंकि लोग उनको देखते हैं और अगुआ उनके आदर्श हैं। मेरे बारे में तो लोग कहते हैं, "कि श्रीमाताजी तो श्रीमाताजी हैं उनसे हम क्या ले सकते हैं?" परन्तु अगुआओं से लोग सबक लेते हैं और वो समझते हैं कि यह बात गलत है यह ठीक नहीं है।

सर्वप्रथम आपको आदर्श होना चाहिए, सहजयोग के आदर्श। यही बात मैं हमेशा से बताती चली आ रही हूँ कि "अपने अहं से मुक्ति पा लो।" ये सबसे बुरी चीज है क्योंकि

यही क्रोध को जन्म देता है। आप सोचते हैं कि आप कुछ महान हैं, आप ये कर सकते हैं आप वो कर सकते हैं क्योंकि आप सहजयोगी हैं। ये बात सत्य नहीं है। इसके विपरीत अत्यन्त विनम्र बनें, अत्यन्त विनम्र, और अच्छे कार्य करें। अब आप अहंकारी तथा क्रोधी न बने रहें। क्रोध आपको पूरी तरह से छोड़ देता है। यह (सहजयोग) आपको सन्तुलन देता है, विवेक देता है जिसके द्वारा आप देख पाते हैं कि आपका क्या कार्य है, पृथ्वी पर आप क्यों आए हैं, आपमें ये शक्ति क्यों आई है और आप दिव्य व्यक्तित्व क्यों हैं। यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। आपने अपनी देखभाल नहीं करनी, नहीं। परमात्मा आपकी देखभाल करेंगे। पूर्णतः वे आपकी रक्षा करेंगे, देखभाल करेंगे और जो भी आपकी आवश्यकता है वह सब करेंगे। परन्तु यदि आपमें अहंकार है, वास्तविकता से, सत्य से आप परे हैं और आपमें यदि क्रोधी स्वभाव है, अहंकारमय व्यक्तित्व है तो यह दुर्गुण चले जाने चाहिएं।

सहजयोगी सन्त हैं। सन्त ही नहीं वे सन्तों से भी ऊपर हैं क्योंकि वे अपनी अभिव्यक्ति सन्तों से भी बेहतर कर सकते हैं। उनमें शक्तियाँ हैं जिनका वे उपयोग कर सकते हैं, जिन्हें वे अन्य लोगों को दिखा सकते हैं कि वे कितने शक्तिशाली हैं कि अन्य लोगों से कहीं बेहतर रूप से वे कार्य कर सकते हैं।

उदहारण के रूप में, **मान लो कोई समस्या है जिससे पूरा विश्व परेशान है। आपके पास यदि साक्षी रूप से इसे देखने का ज्ञान है तो ये समस्या समाप्त हो जाएगी, पूरे विश्व में ये समस्या समाप्त हो जाएगी। यह रह ही नहीं सकती।** इन दिनों विश्व उपद्रवों से भरा हुआ है। आप जैसे देखते हैं संसार में मूर्ख और झगड़ालू लोग सब पर प्रभुत्व ज़माने वाले लोग उभर कर आ रहे हैं। इस समय यदि आप ये सब साक्षी भाव से देखें तो ये समाप्त हो जाएगा क्योंकि आप लोग अत्यन्त शक्तिशाली हैं। परन्तु आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि इस शक्ति का उपयोग करने के लिए आपके पास साधन हों। आपके अन्दर यदि ये साधन हैं तो आप यह कार्य कर सकते हैं। अपने अहंकार से आप ये कार्य नहीं कर सकते। उत्थान मार्ग में अहं सबसे बड़ी बाधा है। आप देखें कि अहं उस स्थान पर है जिसे पार करके आपने सहस्रार में जाना है, अन्यथा सहस्रार का भेदन अत्यन्त सुगम है। परन्तु यदि अहं बना हुआ है तो आप पहले से ही इस अहं में खोए हुए हैं।

अतः व्यक्ति को समझना है कि "स्वयं को देखे", क्या वो अहंकारी है? अपने बारे में वह क्या सोचता है। अहं बहुत सीमित है। यह आपको भी सीमित कर देता है और तब आप अपने जीवन के लक्ष्य को नहीं देखते कि क्यों आप आत्मसाक्षात्कारी बने हैं? यह बात आप नहीं समझते। आप अपने मामलों में, अपने परिवार के, बच्चों के तथा अन्य लोगों के मामलों में फँसे हुए हैं। यह बात बहुत ही तुच्छ है। परन्तु आपमें यदि अहंकार विहीन स्वभाव है तो आप अत्यन्त प्रभावशाली हैं। पूरी शक्ति कार्य करती है।

मैने जो देखा है कि सहस्रार की शक्ति बहुत महान है, कुछ लोगों में इसने चमत्कार किए हैं। अत्यन्त महानता पूर्वक उन्होंने इसे कार्यान्वित किया है। परन्तु अहंकार के कारण बहुत से लोग इस स्तर के नहीं हैं कि हम कह सकें कि वो सहजयोगी हैं।

यहाँ पर मैं आपको यही सब बताने के लिए हूँ। जिन दिनों में ये सब अवतरित हुए थे, उन्हें बताने के लिए, उनका पथ–प्रदर्शन करने के लिए कोई भी न था। इसके विपरीत वातावरण ने उन्हें नष्ट किया। लोग ये न समझ सके कि उनमें अहंकार का अभाव क्यों है और क्यों वे इतने विनम्र हैं। अतः लोगों ने उनका दुरुपयोग किया। परन्तु अब आप लोगों में शक्तियाँ हैं। आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि किस प्रकार अपनी शक्तियों का उपयोग करना है। परन्तु इस बात के कारण कि आपमें शक्तियाँ हैं, आपको कतई भी अहंकार नहीं होना चाहिए। इसके विपरीत आपको अत्यन्त विनम्र होना चाहिए। आपमें विनम्र होने की शक्ति है। आप यदि विनम्र हो सकें और ये समझ सकें कि ये लोग अभी तक आत्म साक्षात्कारी नहीं हैं, अत्यन्त निम्न स्तर पर हैं, अभी तक अहंकार में फँसे हुए हैं। निम्न स्तर पर हैं और उन्हें उन्नत होना है। जब आप ये बात समझ लेंगे तब आप न केवल उन पर दया करेंगे परन्तु उन्हें समझेंगे भी सही। तब आपको एक प्रकार की परमेश्वरी सहायता प्राप्त होगी जो सभी समस्याओं का समाधान करेगी।

मुझे लगता है कि कभी–कभी आपमें से अधिकतर लोगों को बहुत निम्न–स्तर की समस्याएं होती हैं। तब मैं हैरान होती हूँ कि इन समस्याओं से आप परेशान क्यों हैं! आप समझें कि आप शक्तिशाली हैं। अतः सहस्रार में आपको समझना हैं कि वहाँ कौन सी शक्तियाँ हैं। यहाँ एक हजार शक्तियाँ हैं। आपमें एक हजार शक्तियाँ है जो ज्योतित हो रही हैं। इस बात को यदि आप समझ सकेंगे तो आप जान जाएंगे कि अहंकार को बनाए रखने का क्या लाभ है (अर्थात कोई लाभ नहीं) क्योंकि आपमें इतनी सारी शक्तियाँ हैं जिनका आपने उपयोग नहीं किया। आपको इनका उपयोग करना है। परन्तु अहंकार के कारण आप इनका उपयोग नहीं कर सकते। प्रेम से आप इनका उपयोग कर सकते हैं। केवल प्रेम से ही आप इनका उपयोग कर सकते हैं और बहुत कुछ कर सकते हैं।

अतः आज मैं आप सबसे प्रार्थना करुंगी कि आप शपथ लें कि "अब हम अपने अहं को कोई अवसर नहीं देंगे। इसे हम त्याग देंगे, अपने अहं को हम त्याग देंगे। हम अपना अहं त्याग देंगे।" अहं में कोई विवेक नहीं है, ये हमारे मार्ग की बाधा है। सहस्रार जब कार्य करना चाहता है तो अहं की बाधा के कारण ये कार्य नहीं कर पाता। अतः किसी भी चीज़ का अहं न करें। आप चाहे बहुत अच्छे गायक हों, आप चाहे जो हों, हो सकता है आप कोई बड़े आदमी हों। ये सब तथाकथित चीज़ें अर्थहीन हैं। आज हमें अहं विहीन लोगों की आवश्यकता है जिनमें शक्तियाँ पूरी तरह से प्रवाहित हो रही हों।

सहस्रार के खुलने से ये सारी शक्तियाँ प्रवाहित होनी चाहिएं–यदि सहस्रार पूरी तरह से खुला हुआ है तो ये सारी प्रेम की शक्तियाँ प्रवाहित होनी चाहिएं। आप हैरान होंगे जहाँ भी मैं जाती हूँ लोग मुझसे प्रेम करने लगते हैं! मैं नहीं जानती क्यों? मैं उनके लिए कुछ नहीं करती फिर भी वे मेरे प्रेम को महसूस करते हैं। यही होना चाहिए कि लोग आपके प्रेम को महसूस करें और समझें कि आप अत्यन्त प्रिय व्यक्ति हैं।

यही बात है कि आप लोगों को विशेष बनाया गया है, अत्यन्त विशेष–इस पूरे विश्व की मुक्ति के लिए। ये आपका कार्य है। बिना बात के धन एकत्र करते रहना तथा अन्य सारी बेवकूफी भरे कार्य करना नहीं। आप यहाँ अत्यन्त विवेकशील कार्य करने के लिए हैं। यह कार्य लोगों की कुण्डलिनी उठाना है और उन्हें अपनी महानता के प्रति चेतन करना है। मानव का सृजन केवल युद्ध करने के लिए नहीं किया गया, राजनीति तथा अन्य अभद्र चालाकियाँ करने के लिए नहीं किया गया। पृथ्वी पर गन्दी तथा अभद्र जिन्दगी बिताने के लिए उन्हें नहीं बनाया गया। जिस परमात्मा ने हमारा सृजन किया है उसके महान कार्य करने के लिए हम इस विश्व में आए हैं। अतः ये सम्भव है। आप यदि इस बात को जानते हैं कि आपके सहस्रार खोले जा रहे हैं और इसी सहस्रार में पावनता का निवास है, उन सब तुच्छ चीज़ों का नहीं जिनके विषय में आप चिन्तित हैं। कुछ लोग सहजयोग के विचारों का लाभ उठाने का प्रयत्न करते हैं कि 'वे बेहतर कार्य कर सकते हैं, भली–भांति लोगों की सहायता ले सकते हैं'–ऐसा कुछ नहीं है। आप स्वयं अपनी सहायता कर सकते हैं, किसी सहायता की आपको आवश्यकता नहीं। इसके विपरीत आपको अन्य लोगों की सहायता करनी है। कहीं से भी किसी सहायता की आशा न करें। मेरी ओर देखें। मैं एक सर्वसाधारण गृहणी हूँ परन्तु किस प्रकार से सहजयोग पूरे विश्व में कार्यान्वित हुआ? किसने किया? प्रेम की शक्ति ने। समस्या केवल इतनी है कि मैं अपने प्रेम की शक्ति को उपयोग कर सकती हूँ परन्तु आप लोग इसे उपयोग नहीं कर सकते। केवल इतनी सी समस्या है।

आप यदि अपनी प्रेम शक्ति का उपयोग करना चाहते हैं तो ध्यान धारणा से इस शक्ति को विकसित कर सकते हैं। इसके द्वारा आप लोगों के हृदय पर छा सकते हैं। इससे आप उनके विषय में जान सकते हैं। उनकी समस्या ये है कि वो सहजयोगी नहीं हैं, उन लोगों को परमात्मा का आशीर्वाद नहीं है और वे परमात्मा से एकरूप नहीं हुए हैं। कल्पना करें कि आप परमात्मा से एक रूप हैं और परमात्मा ने पूरे ब्रह्माण्ड का सृजन किया है, आपका सृजन किया है और सभी महान कार्य किए हैं। तो आप क्या हैं? परमात्मा की शक्ति के आप अंग–प्रत्यंग हैं। अतः अपने अन्तः स्थित परमेश्वरी शक्ति का क्यों न हम पूरे प्रेम और सूझ–बूझ के साथ उपयोग करें ताकि आपमें यह विवेक विकसित हो जाए।

यही बात आपने स्वयं को बतानी है कि

"हम आत्म–साक्षात्कारी व्यक्ति हैं, यह अत्यन्त विशेष व्यक्तित्व है। इस विश्व में बहुत ही कम आत्म साक्षात्कारी लोग हैं। परन्तु अब हमारी संख्या काफी है। मैं लोगों को देख सकती हूँ परन्तु अब भी यदि हममें इस बात की कमी है, अभी भी यदि कुछ समस्या बाकी है तो ये हमारे अहं के कारण है। व्यक्ति को किसी भी चीज़ का अहंकार नहीं करना चाहिए। हर चीज़ नश्वर है केवल परमात्मा का प्रेम ही शाश्वत है। केवल दिव्य व्यक्तित्व शाश्वत है। हर समय आप देखते हैं कि सन्तों की मृत्यु के पश्चात् भी लोग उन्हें याद रखते हैं, उनकी कविताओं को याद करते हैं। यद्यपि वे लोग सहस्रार का अधिक कार्य न कर पाए, लोगों को आत्म साक्षात्कार न दे पाए, फिर भी उनके दिव्य व्यक्तित्व के कारण अभी भी उनका सम्मान होता है। लोग जानते हैं कि ये सन्त बहुत अच्छे कार्य कर रहे हैं, चमत्कारिक चीज़ें कर रहे हैं।

इसी प्रकार से आप भी अपने चमत्कार देख सकते हैं। आप स्वयं इस बात को देख सकते हैं कि आपमें क्या करने की योग्यता है क्योंकि अब आप परमात्मा से एकरूप हो गए हैं। यह सत्य आपको समझना चाहिए। जब भी कभी भय हो, जब भी कोई समस्या हो तो आप कहेंगे, "हमें बचा लिया जाएगा।" इसमें कोई सन्देह नहीं है। आपके कारण बहुत से लोगों की रक्षा हुई है। परन्तु इतना ही काफी नहीं है आपकी रक्षा किसलिए की गई है? आपके जीवन का क्या मूल्य है? आप किसलिए जीवित हैं? मामाला क्या है? परमात्मा ने आपकी रक्षा क्यों की और आपको ये सब क्यों प्रदान किया? क्योंकि विश्व के लिए इतना कुछ होना बाकी है। मैं कहना चाहूँगी कि आप लोग ही सत्य के सिपाही हैं, अच्छाई के सिपाही हैं और ये सभी कार्य आपने अत्यन्त उत्साह एवं अपने प्रति सूझ–बूझ के साथ करने है।

अतः आप लोगों ने आत्म ज्ञान प्राप्त करना है। आपको अपने विषय में जानना होगा। आपको आत्म–ज्ञान प्राप्त करना होगा कि आप क्या हैं? ये ज्ञान यदि आपको प्राप्त नहीं हुआ तो सहस्रार खोलने का क्या लाभ है? आत्म–ज्ञान से आपमें अहंकार नहीं आता, बिल्कुल भी नहीं। यह तो आपको आपके कर्त्तव्यों का ज्ञान कराता है और बताता है कि आपने क्या कार्यान्वित करना है।

सहजयोग केवल आपके लिए नहीं है, पूरे विश्व के लिए है कृपा करके इसको समझने का प्रयत्न करें। कई बार हम सोचते हैं कि सहजयोग हमारी बेहतरी के लिए है, हमें अच्छा स्वास्थ्य देने के लिए है आदि–आदि। वास्तव में ऐसा नहीं है, ये अन्य लोगों की बेहतरी के लिए है। आपके पास शक्तियाँ हैं जिनका आप उपयोग नहीं कर रहे। आप अब भी व्यस्त हैं। मुझे ऐसे पत्र मिलते हैं जिनमें लिखा होता है "हमें ये परेशानी है हमें वो परेशानी है।" क्यों नहीं आप स्वयं को ठीक कर सकते? आप स्वयं को यदि ठीक नहीं कर सकते तो अन्य लोगों को किस प्रकार ठीक करेंगे? यही सच्चाई है।

मैं कहूंगी कि एक ऐसी सूझ–बूझ है जो

आपकी सूझ–बूझ में प्रवेश करके कहती है कि 'आप महान हैं।' आप साधारण लोग नहीं हैं। इस बात का अभ्यास किया जाना चाहिए और इस प्रकार से इसका उपयोग होना चाहिए कि उससे पता लगे कि आप सहजयोगी हैं, आप किसी भी सूफी या साक्षात्कारी या सन्त से कम नहीं है, किसी भी प्रकार से कम नहीं है। परन्तु आपके पास जो शक्तियाँ हैं वो उनके पास न थीं। इन शक्तियों के प्रति वे चेतन भी न थे। अब आपके पास ये शक्तियाँ हैं अतः समझने का प्रयत्न करें कि आपके पास कौन सी शक्तियाँ हैं। इस बात को समझकर आपमें अहंकार नहीं होना चाहिए। ये तो आपका कार्य है जिसे आपने करना है। आप लोग इसका आनन्द लेते हैं क्योंकि इसमें अहंकार नहीं है। यह अहंकार विहीन कार्य है। इतना कुछ यदि आप कर सकें तो बहुत अच्छा होगा।

अब अहंकार काफी नीचे आ गया है। ये बात मैं कहना चाहूंगी कि अब अहंकार बहुत कम हो गया है। लोगों से मुझे ये बात सुनने को मिलती है कि अहंकार का स्तर नीचे आ गया है। परन्तु कभी–कभी अब भी वे अत्यन्त चिन्तित होते हैं और परस्पर झगड़ते हैं। इस सबके बावजूद भी मैं अवश्य कहूंगी कि इन वर्षों में जो भी कार्य हुआ है लोगों ने मिल–जुलकर इसे कार्यान्वित किया है।

अतः आपको स्वयं को देखना होगा। आपने स्वयं देखना होगा कि मुझमें क्या अहंकार है? आपको अहंकारी क्यों होना चाहिए। कुछ लोगों को अपने देश का अहंकार है, कुछ को कुछ अन्य का। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि ये पौराणिक है, मिथ्या है। आपका जन्म कहीं और भी तो हो सकता था। आपका जन्म किसी और देश में भी तो हो सकता था। यद्यपि आपने किसी देश विशेष में जन्म लिया है परन्तु आपको इस बात का अहंकार है। इस अहंकार पर आपको लज्जा आनी चाहिए क्योंकि आपका देश चाहे जो भी हो वह बहुत अच्छा कार्य नहीं कर रहा। आध्यात्मिक रूप से वह सशक्त नहीं है। तो फिर क्यों आपको गर्व है? जब आप वहाँ पर सहजयोग कार्यान्वित करेंगे और आध्यात्मिक रूप से वहाँ लोग सशक्त हो जाएंगें केवल तभी आप अपने देश पर गर्व कर सकते हैं। परन्तु मैं देखती हूँ कि ऐसा नहीं हो रहा है। अतः आपको ही यह सब कार्यान्वित करना है।

ये देखकर मुझे प्रसन्नता होती है कि सहजयोग अब सर्वत्र फैल गया है। बहुत तेजी से यह फैल रहा है। जिन देशों में मुझे आशा भी न थी, ये वहाँ फैल रहा है, वहाँ भी लोग इसे पाना चाहते हैं। लोग आत्म–साक्षात्कार पाना चाहते है और ये जानना चाहते हैं कि मानव जीवन से आगे क्या है। मानव के रूप में, अब वे अपना जीवन बर्बाद नहीं करना चाहते है। परन्तु महा–मानव के रूप में जिन्हें मैं सहजयोगी कहूंगी, वे उन्नत होना चाहते हैं।

अतः हमारे अहं का देखा जाना आवश्यक है। साक्षी अवस्था में ये देखा जाना चाहिए कि ये किस प्रकार कार्य करता है और किस प्रकार हमें अच्छे मार्ग पर चलने से रोकता

है। इस मामले में व्यक्ति को अत्यन्त सावधान होना चाहिए क्योंकि ये अन्तिम चक्र है जिसे खोला जाना आवश्यक है। एक बार जब ये चक्र पूरी तरह खुल जाएगा तो आप परमात्मा से एकरूप हो जाएंगे और आपकी सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। ये समस्याएं, क्योंकि इतनी तुच्छ हैं, इतनी अर्थहीन हैं कि सहस्रार के कार्यान्वित होते ही ये स्वतः ही चली जाएंगी।

ये बहुत अच्छी बात है कि आज विशेष दिन है। आज ये तीनों सितारे समीप आ रहे हैं। ये विशेष आशीर्वाद है। आपकी शक्तियाँ यदि बढ़ जाएंगी तो ये लोग, जो अपनी राजनीतिक गतिविधियों से पूरे समाज पर छा जाने का प्रयत्न कर रहे हैं, ये सब लुप्त हो जाएंगे। उनमें शाक्तियाँ नहीं हैं। वो गायब हो जाएंगे।

अतः सर्वप्रथम आपका अहंकार विहीन स्वभाव सहायक होगा–सबकी सहायता करेगा।

**परमात्मा आपको धन्य करें।**

# श्रीमाताजी ने हमारी आत्मा को स्वच्छ कर दिया

## श्रीमाताजी चीन में

16–19, दिसंबर, 2001

दिसंबर में भारत लौटते हुए श्रीमाताजी अपनी निजी यात्रा पर हाँग–काँग पधारीं। मुम्बई से उन्हें लेने के लिए सर सी.पी. और कल्पना दीदी भी आए थे। हफ्तों पहले हमने सारे प्रबन्ध कर लिए थे। पार्कलेन होटल में उनके रहने के लिए दो कमरों का एक बहुत अच्छा सैट (Suite) हमने ले लिया था। ये होटल हाँग–काँग टापू में कॉजवेबे (Causewaybay) आश्रम के बिल्कुल समीप है।

श्रीमाताजी के आने से पहली रात सहजयोगी महिलाओं ने श्रीमाताजी के कमरों को फूलों तथा अन्य चीज़ों से इतना सुन्दर परिवर्तित कर दिया कि यह बिल्कुल घर जैसा लगने लगा। परमेश्वरी माँ के आने से पूर्व उनके रहने के स्थान को चैतन्यित करने के लिए वहाँ एक पूजा की गई।

सोलह दिसंबर प्रातः श्रीमाताजी वहाँ पहुँचीं। तूफानी हवाओं के कारण उनके यान को ताइवान के रास्ते आने में सोलह से भी ज्यादा घण्टे लगे थे। श्रीमाताजी का फूलों से स्वागत करने के लिए थोड़े से लोग एकत्र हुए। मुस्कराहट बिखेरती हुई श्रीमाताजी हमारे सम्मुख प्रकट हुईं। वे अत्यन्त तरोताजा प्रतीत हो रही थीं। वे हमसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुइ और हम सबका हाल–चाल पूछा। हमने अपनी परम पावनी माँ के प्रेम एवं करुणा को महसूस किया। उनकी मधुर मुस्कान ने हमारे हृदय को छू लिया और हमारी आत्मा को पवित्र कर दिया। उन्होंने बताया कि उड़ान ने आशा से कहीं अधिक समय लिया है। अतः हम उन्हें तेजी से कार तक और वहाँ से होटल लेकर आए।

होटल के कमरे देखकर श्री माताजी बहुत प्रसन्न हुई तथा उन्होंने ये सारी व्यवस्था करने के लिए हमें धन्यवाद दिया। श्रीमाताजी ने टी.वी. पर समाचार देखना चाहा क्योंकि भारत और पाकिस्तान के बीच कुछ घटनाएं घटित हुई थीं जिन्हें वे जानना चाहती थीं। उनका चित्त पूरी तरह से इस क्षेत्र की वर्तमान स्थिति पर था। पहले दो दिन श्रीमाताजी ने आराम करने और समाचार देखने में बिताए। उनका चित्त अमरीका के राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू. बुश पर काफी था। श्रीमाताजी ने बताया उन्होंने कई अवसरों पर जार्ज डब्ल्यु.बुश को पत्र लिखे और बुश ने उनके सुझावों को स्वीकार किया। अपने कई प्रवचनों में श्रीमाताजी ने इन पत्रों के विषय में बताया।

कौन इस बात की कल्पना कर सकता है कि घटनाक्रम क्या होगा और किस प्रकार ये

व्यक्ति आसुरी शक्तियों को पराजित करने के लिए चुना जाएगा।

18 दिसंबर मंगलवार प्रातः श्रीमाताजी वहाँ बाजार में सहजयोगियों तथा अन्य लोगों के लिए उपहार खरीद रही थीं। सदैव वे अन्य लोगों के लिए ही चीज़ें खरीदती रहती हैं, अपने लिए कभी कुछ नहीं खरीदती। जब से वे हाँग–काँग आ रहीं हैं, इन सभी वर्षों में मैंने उन्हें अपने लिए कभी कुछ खरीदते नहीं देखा। जब श्रीमाताजी आती हैं तो चीज़ों की सेल लगी होती है और उन्हें वस्तुओं के मूल्य पर बहुत बडी छूट प्राप्त हो जाती है। डिजाइनों की सूक्ष्मता के विषय में उनकी दृष्टि चमत्कारिक है और दुकान पर बिकने वाली चीज़ों में से सर्वोत्तम चीज़ें वे निकाल लेती हैं। चैतन्य बहता है और दुकान पर कार्य करने वाले सहायक आत्म–साक्षात्कार प्राप्त कर लेते हैं।

मंगलवार शाम को हमने श्रीमाताजी के लिए रात्रि भोज का आयोजन किया हुआ था परन्तु खरीददारी करन के पश्चात वे थक गई थी। अतः उन्होंने आराम किया और रात का खाना अपने कमरे में ही खाया।

रात्रि भोज के पश्चात् एक संगीत संगोष्ठी का आयोजन किया हुआ था श्रीमाताजी ने उसमें आने को सहमति दी क्योंकि वे योगियों को निराश नहीं करना चाहतीं थीं। छोटे से समारोह कक्ष में यह अत्यन्त आत्मीय व्यवस्था थी जिसमें केवल पैंतीस योगियों ने भाग लिया। श्रीमाताजी ने सभी योगियों को एक–एक अंगूठी भेंट की और कहा ये आपकी सुरक्षा के लिए है।

फ्लोरेन्स नाम की एक चीनी योगिनी ने चीन का एक पारंपरिक तारों वाला वाद्य यन्त्र गुज़ैंग (Guzheng) बजाया। इस यन्त्र को आधुनिक रूप दिया हुआ था। उसने चीन के कुछ प्रसिद्ध लोक गीत बजाए और श्रीमाताजी ने वास्तव में संगीत का आनन्द लिया। तत्पश्चात् हाँग–काँग के सहजयोगियों ने कुछ भजन गाए। ये संध्या अत्यन्त ही सुन्दर थी और श्रीमाताजी के साथ इतने आत्मीय वातावरण में समय बिताने का सभी योगियों ने आनन्द लिया।

श्रीमाताजी सभी के साथ बहुत प्रसन्न थीं। उन्होंने चीन की स्थिति पर बहुत चित्त डाला। जोयो (Goyo) नाम की एक महिला श्रीमाताजी के साथ रहने के लिए विशेष रूप से गुआनडोंग (Guandong) प्रांत से आई थी। श्रीमाताजी के दर्शन करके उसे बहुत प्रसन्नता हुई। तत्पश्चात् श्रीमाताजी ने हाँग–काँग के दो नए अगुआ नियुक्त किए। अब एडविन हाओ (Edvin Hou) और लिली चेन (Lily Chen) हाँग–काँग तथा चीन में सहजयोग का कार्य संभालेंगे। मेरे लिए यह मेरे जीवन के एक अध्याय का अन्त था क्योंकि पिछले दस वर्षों से मैं हाँग–काँग में सहजयोग के कार्य को संभाल रहा था और वहाँ की सामूहिकता को बढ़ते तथा परिपक्व होते मैंने देखा था। ये लोग अब चीन में सहजयोग कार्यान्वित होने के लिए नीवें (Foundations) मुहैया कराएंगे।

बुधवार सवेरे श्रीमाताजी ने साड़ियाँ खरीदनी चाहीं। अतः हम कोलून

(Kowloon) के प्रसिद्ध साड़ी एम्पोरियम में गए। खरीदारी करने के पश्चात् वहाँ के प्रबन्धक तथा सहायक को आत्म साक्षात्कार दिया। हमने उनसे दोनों हाथ श्रीमाताजी की ओर फैलाने के लिए कहा और उन्होंने शीतल लहरियों का अनुभव किया। श्रीमाताजी बहुत प्रसन्न थीं कि उन्हें आत्मसाक्षात्कार मिल गया है। उन्होंने उन्हें बहुत उत्साहित किया और उन्हें सहज कार्यक्रमों में आने के लिए कहा।

अन्तिम क्षण में हमने विपणन की एक अन्य योजना बनाई परन्तु दुर्भाग्य से समय बहुत कम पड़ गया। हम हवाई–अड्डे के लिए चल पड़े। सर सी.पी. के साथ उनके पुराने मित्र टोमी चैंग (Tommy Cheung) भी थे। जब–जब भी श्रीमाताजी हाँग–काँग आती हैं ये उनसे मिलने के लिए अवश्य आते हैं।

सूर्य चमक रहा था और सुखद गर्मी थी। हम सब पर उदासी छाई हुई थी कि श्रीमाताजी ने शीघ्र ही चले जाना है। हवाई अड्डे पर उनसे मिलने के लिए थोड़े से योगी एकत्र हुए और उन्होंने उनसे फूल लेने और बातचीत करने में समय बिताया। श्रीमाताजी ने हम सबका धन्यवाद किया और अप्रवास नियंत्रण (Immigration Control) से निकलीं। दूर खड़े हम प्रतीक्षा करते रहे और उन्हें देखते रहे और उन्होंने अन्तिम बार हमारी ओर अपना हाथ हिलाया और मुम्बई का यान पकड़ने के लिए चली गईं।

हम सब लोग उदास थे परन्तु चार दिनों तक उनके इतना समीप रहने के लिए स्वयं को भाग्यशाली भी मान रहे थे। हम जानते थे कि हमारे बहुत से भारतीय भाई–बहन उत्सुकता पूर्वक उनके मुम्बई आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

लॉस–एंजलिस और हाँग–काँग के मध्य श्रीमाताजी ने तीन विमान परिचारिकाओं को आशीर्वाद दिया। जिस परिचारिका का हाथ श्रीमाताजी ने पकड़ा हुआ था वह कहने लगी, "श्रीमाताजी आपके हाथ से आती हुई बेइन्तहा शक्ति को मैं महसूस कर रही हूँ। मुस्कराते हुए श्रीमाताजी ने उत्तर दिया, "मेरे पास केवल प्रेम एवं करुणा की शक्ति है। जहाज़ तैपी (Taipei) अड्डे पर अनुसूचित रूप से रुका और श्रीमाताजी का चित्त ताइवान पर गया। तीनों विमान परिचारिकाओं – एक फिलीपीन से, एक जापान से और तीसरी चीन से–ने श्रीमाताजी का ध्यान इन देशों के सहजयोगियों तथा सहजयोग पर दिलवाया। बाद में श्रीमाताजी का चित्त मलेशिया और इंडोनेशिया पर भी गया क्योंकि जब हम हाँग–काँग पहुँचे तो यह कुमारी दिवस (Maids' Day) था।

**अविनाश निचकावड़े**

# विराट के अंग–प्रत्यंग

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

हाँग–काँग, 18 दिसंबर, 2001

आप सब लोगों को भजन गाते हुए सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। ये भजन विश्व भर में गाए जाते हैं। अब आप विराट के अंग–प्रत्यंग हो गए हैं। सहजयोगी सर्वत्र हैं। अमरीका में, मैं हैरान थी कि विश्व व्यापार केन्द्र घटना में तीन सौ सहजयोगियों की रक्षा की गई। किसी एक भी सहजयोगी को न तो जान गँवानी पड़ी और न ही कोई घायल हुआ। सोचने योग्य बात है कि कुछ लोगों को तो उस दिन कार्य पर आने में देर हो गई। कुछ उस समय से पूर्व ही उस इमारत से चले गए और कुछ विपरीत दिशा में दौड़ने लगे! और वो सब के सब सहजयोगी थे! "आश्चर्य की बात है कि किस प्रकार परमात्मा ने आपकी देखभाल की तथा रक्षा की!

ताओ (Tao) ही सहजयोग है। मैं सोचती हूँ कि चीन में हम बहुत कुछ कार्य कर सकते हैं। चीन में पहले से ही ताओं की परम्परा है। ताओ सहजयोगी है और वह अपनी मानसिक अवस्था और अपनी सभी समस्याओं का वर्णन बड़ी अच्छी तरह से करता है।

जो भी हो ताओ मत को नहीं माना गया तथा यह सभी विद्वानों के लिए विवाद का विषय बन कर रह गया। परन्तु अब मैं सोचती हूँ कि अब ये लोग इस पर विचार कर रहे हैं। मुझे बताया गया कि अब ताओ धर्म को चीन में स्वीकार कर लिया गया है और अब वो लोग ताओ का अभ्यास कर रहे हैं। हम भी ऐसा कर सकते हैं। तो अब हम ताओवादी हैं।

चीन के प्रधानमंत्री ली.पेंग को मेरा फोटो दिखाया गया। वह कहने लगा, हाँ "यह महिला मुझे याद हैं, इनका बहुत ही प्रशंसनीय व्यक्तित्व है....." उन लोगों ने कहा, "ये हमारी गुरु हैं, ये ऐसी हैं, इन्होंने हमारे लिए इतना कुछ किया है। वो बहुत प्रभावित हुए और अपने सांस्कृतिक मामलों के सहायक से कहा कि वो मुझे मिलें–"अवश्य उनसे मिलें और उनके विषय में ज्ञान प्राप्त करें–यद्यपि वो लोग साम्यवादी हैं फिर भी....."

"उनका सहायक मुझसे मिलने के लिए आया.....उसने अपनी आँखे बन्द कर लीं और आनन्द में चला गया। तब मैंने उसे इसके विषय में सब कुछ बताया।"

**चीन के लोगों के विषय में**

चीन के लोगों की जो बात मुझे अच्छी लगी वो ये है कि वो अत्यन्त विनम्र एवं सम्मान पूर्ण थे। जब मैं संयुक्त राष्ट्र महिला संगोष्ठी के लिए बीजिंग गई तो उन्होंने रहने के लिए हमें होटल की पूरी मंजिल दे दी। उन्होंने हमें दो कारें भेजीं, एक मेरी

व्हील चेयर के लिए और एक मेरे निजी उपयोग के लिए। मेरी देखभाल करने के लिए उन्होंने बहुत से लोगों का प्रबन्ध किया, उनमें से एक ने कहा, "श्रीमाताजी कल मैं नहीं आ पाऊंगा।" मैंने कहा, "क्यों क्या मामला है?" 'कल मेरा विवाह है' मैंने कहा, "आपका विवाह हो रहा है फिर भी हर समय आप मेरे साथ बने रहते हैं।" कहने लगा, "आपके साथ रहने का मैंने बहुत आनन्द लिया।" यद्यपि मैं वहाँ देर से पहुँची थी फिर भी बहुत तेजी से वे मुझे महिला संगोष्ठी में ले गए। बीच में बिल्कुल भी समय न था। मैं जब हवाई अड्डे पर आई तो वो भी वहाँ पर आए। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। वे अत्यन्त प्रेममय और अच्छे लोग हैं। उन्होंने बहुत कष्ट उठाए हैं। परन्तु यहाँ हाँग–काँग में आप लोग ठीक–ठाक हैं। आपको स्रोत से जुड़ना है..... मुख्य वृक्ष से यदि आप जुड़े रहेंगे तो आप उन्नत होंगे। मैं जानती हूँ कि कौन क्या है, वो क्या कर रहे हैं, किसमें क्या कमियाँ हैं। उनके विषय में मैं सब जानती हूँ। अतः हमें सहजयोग को फैलाना हैं। कुछ लोग जो बहुत महत्वपूर्ण हैं उनमें मुझे पहचानने की योग्यता है। भारत के एक गृहमंत्री मेरा बहुत सम्मान करते है। वे मेरे घर आए और आत्म साक्षात्कार लिया।

**सहजयोग में मुसलमान**

अब भारत में सहज में बहुत से मुसलमान भी हैं। ये जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि अफ्रीका में बैनिन और आइवरी कोस्ट नामक देश, फ्रांस शासित सात देशों में मुसलमान लोग थे। अब उनमें से बहुत से लोग सहजयोगी बन गए हैं। इन देशों में अब तक बीस हजार सहजयोगी हो गए हैं और इससे अधिक भी बहुत से लोग होंगे.... आइवरी कोस्ट का अध्यक्ष भी सहजयोगी है।

बहुत से देशों में सहजयोग कार्यान्वित हो रहा है। ये ऐसा समय है जब लोग सत्य को खोज रहे हैं। वे सत्य प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसा सभी देशों में हो रहा है और सर्वत्र सहजयोग बहुत तेजी से फैल रहा है।

मैं हैरान थी कि नाइजीरिया में किस प्रकार चीजें कार्यान्वित हो रही हैं! आप कहीं भी जाएं लोग असत्य से तंग आ चुके हैं। सभी धर्मों में मैंने पाया है, किसी न किसी तरह से असत्य की सृष्टि करके लोगों ने समूह बना लिए हैं।

ये सात अफ्रीकन देश–बैनिन, बरकीना फासो, कैमरून, चैद, आइवरी कोस्ट और नाइगर एंटोगो हैं।

जावेद खान लिखित एक बहुत अच्छी पुस्तक है (Islam Enlightened) 'ज्योतित इस्लाम'। लोग कह रहे हैं ये कुरान कुण्डलिनी जागृति है। आप सबको यह मिल चुकी है।

परमात्मा का बहुत धन्यवाद है कि मैं अमरीका गई और वहाँ युद्ध अत्यन्त शीघ्र समाप्त हो गया। परन्तु इसने पूरे विश्व को हिला दिया है। परमात्मा का बहुत धन्यवाद है कि अब युद्ध समाप्त हो गया है। लोगों को युद्ध के बाद के परिणाम भुगतने होंगे।

मैंने देखा है कि सहजयोग में भी लोग धर्मान्ध हो जाते हैं। हम धर्मान्धता के विरूद्ध हैं। हम स्वतन्त्र लोग हैं। हमें आत्म–

साक्षात्कार प्राप्त हो गया है जो कि हमारा आध्यात्मिक जन्म है। आप लोग किसी भी चीज से बंधे हुए नहीं है, आप कुछ भी गलत नहीं कर सकते, आप कभी भी गलत कार्य नहीं करेंगे। आपकी सभी बुराइयाँ स्वतः चली जाएंगी। आपको कुछ बताना नहीं पड़ेगा कि ऐसा करें, ऐसा न करें।

मैंने देखा है कि कुछ समय के पश्चात् सभी सहजयोगी ठीक हो जाते हैं, उनमें विवेक आ जाता है। जो लोग चले गए हैं, मुझे विश्वास है, वो भी वापिस आ जाएंगे क्योंकि आखिरकार ये कुण्डलिनी है जो उनमें बैठी हुई है। यह उठेगी और उन्हें सुधारेगी।

ये देखकर मुझे प्रसन्नता हुई कि हाँग–काँग में भी आप लोगों ने सहजयोग को सम्भाला हुआ है। मुझे विश्वास है कि ये बढ़ेगा, विशेष रूप से चीन में.....। चीन के लिए आपको बहुत कुछ करना होगा और इसे कार्यान्वित करना होगा क्योंकि यह ताओ का संदेश है। यह बिल्कुल नई चीज़ नहीं हैं। मैंने तो केवल इतना किया है कि इसे सामूहिक बना दिया है, सामूहिक आन्दोलन। बस बात इतनी सी हैं। अन्यथा ये वही पुरानी चीज़ है। सभी महान सूफियों ने, सभी महान सन्तों ने, अवतरणों ने एक ही बात कही है, "स्वयं को जानो, स्वयं को पहचानो, स्वयं को खोजो"। सभी ने एक ही बात कही है। मैं जो कह रही हूँ यह कुछ नया नहीं है।

हमें यही कार्यान्वित करना है। लोगों से बातचीत करें और उन्हें बताएं। मैं हैरान थी कि जब हम कैथे (Pacific Airways) द्वारा आ रहे थे तो अविनाश विमान परिचारिका तथा अन्य लोगों से बातचीत करने लगे। एक–एक करके वे सभी मेरे पास आने लगे। कहने लगे "आप अत्यन्त शक्तिशाली व्यक्ति हैं," आदि–आदि। उन सबको आत्म–साक्षात्कार मिल गया। इसी प्रकार से सहजयोग फैलेगा। हमें इसके विषय में सबको बताना होगा, संकोच नहीं करना होगा। अन्य गुरुओं के शिष्यों को मैंने देखा है, वो अपने गुरुओं के बारे में बात किए चले जाते हैं। हमें भी बात करनी चाहिए और लोगों को बताना चाहिए कि ये सच्चाई है। आपको सत्य का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। निःसन्देह कुछ ऐसे भी लोग हैं जो आलोचना करते रहते हैं। ठीक है, ये सब असत्य है और ये चला जाएगा। आप सब लोगों को यहाँ देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। आप सब लोगों का बारम्बर धन्यवाद।

# मेरा हार्दिक प्रणाम

यह मेरी इच्छा थी कि परमेश्वरी माँ के हाँग–काँग में साक्षात् दर्शन करुं, उनका आशीर्वाद लूं और उनके असीम प्रेम का आनन्द उठाऊं। उनसे उस भेंट ने मुझे एक सर्वसामान्य महिला से सहजयोगी बना दिया। कुछ दिनों तक लगातार मैंने अपने जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन देखे। अचानक मैंने महसूस किया कि मेरा हृदय खुल गया है और इस असीम आनन्द एवं प्रेम को अन्य लोगों के साथ बाँटने की मुझको उत्कट इच्छा है। श्रीमाताजी ने मुझे न केवल दूसरा जन्म दिया था बल्कि भली–भांति समझाया था कि परमात्मा ने हमें व्यक्तिगत रूप से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए ही नहीं चुना है उन्होंने अपने इस प्रेम को अन्य लोगों तक पहुँचाने के लिए भी हमें चुना है।

एक उत्तर के साथ जीवन का अर्थ जानने की लम्बी खोज अचानक समाप्त हो गई। सभी कुछ इतने स्वाभाविक एवं जीवंत ढंग से हो गया है कि उसके लिए मुझे कुछ भी न करना पड़ा। ये सब शुद्ध इच्छा से परिपूर्ण हृदय के परिणाम स्वरूप था।

श्रीमाताजी से मेरी प्रथम भेंट हवाई अड्डे पर हुई जब मैं उन्हें लेने के लिए गई।

सम्मान से परिपूर्ण विचारों के साथ हम उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अचानक अत्यन्त सुन्दर एवं हृदय को स्पर्श करने वाली मुस्कान के साथ वे हमारे सम्मुख प्रकट हुईं। मैं नहीं जानती कि तीव्र भावनाओं के कारण या कृतज्ञता के कारण मेरी आँखों से अविरल आँसू इस प्रकार टपक रहे थे जैसे माला का धागा टूट जाने पर उसके मोती गिरते हैं। बाद में मुझे पता चला कि बहुत से अन्य योगियों को भी ऐसा ही महसूस हुआ और अथाह आनन्द का भी अनुभव किया। मेरे इर्द–गिर्द की हर चीज़ अत्यन्त सुन्दर हो गई थी।

उससे पूर्व मेरे परिवार के लोग सहजयोग का थोड़ा सा ज्ञान ले आए थे। मेरा ज्ञान सतही था। मुझे मूल तकनीक का भी ज्ञान न था। हृदय से समर्पण और सत्य–साधना तथा श्रीमाताजी के प्रेम के अतिरिक्त मैंने कुछ नहीं किया और फिर भी मेरी बाधाएं दूर हो गईं। इस अनुभव का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता।

तीसरी रात–दस बजे के बाद होटल का बिना सजा उत्सव कक्ष पावन योगियों तथा कुछ सुन्दर बच्चों से भरा हुआ था। हम सब बैठ गए और ध्यान में चले गए। थोड़ी ही देर बाद अपनी मधुर मुस्कान के साथ श्रीमाताजी दरवाजे पर दिखाई दीं। उनके प्रति अपना गहन सम्मान दर्शाने के लिए हाथ जोड़कर हम सबने उनका स्वागत

**प्रकाशक**
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

**मुद्रक**
अमरनाथ प्रैस प्रा. लिमिटेड
डब्ल्यू एच एस 2/47 कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली–15
फोन : 5447291, 5170197

**सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :–**
श्री ओ.पी. चान्दना
एन – 463 (G-11) ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली – 110034
फोन : (011) 7013464

*सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :*

**चैतन्य लहरी**
सहजयोग मंदिर
सी–17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016

सहजयोग में भी यदि समाधान (संतुष्टि) नहीं है तो आपका सहजयोग करना बेकार है। आप जहाँ भी हैं श्रीमाताजी आपके साथ हैं। योग की उस अवस्था में आप जहाँ भी है 'माँ' भी वहीं हैं। जब आप इस बात को महसूस करेंगे केवल तभी आपको सहजयोगी माना जाएगा।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी